के सन्धि-नियमों को देकर, जिनका प्रयोग बालकों को हिन्दी में करना ही नहीं पड़ता, व्याकरण का कलेवर नहीं बढ़ाया गया है।

कथन-भेद के सम्बन्ध में कतिपय व्याकरणकारों ने तो केवल यही लिखकर सन्तोष किया है कि हिन्दी भाषा में कथन-भेद ही नहीं। कुछ लेखकों ने साधारण, संयुक्त तथा मिश्रवाक्यों के पारस्परिक संश्लेषण-विश्लेषण-प्रकार को कथन-भेद में सम्मिलित कर दिया है। हमने शिक्षा-विभाग द्वारा निर्धारित इस अंग की भी आवश्यक विवेचना की है, और अब कथन-भेद की वास्तविक आवश्यकता और उपयोगिता का विस्तार खुल जाने पर इस विषय की ओर की गई उदासीनता को दूर किया जा सकता है।

अलंकारों का अध्ययन भारतवर्ष में इतने शास्त्रीय ढंग का रहा है कि साधारण विद्यार्थी कालेज से निकलने पर भी उनका यथेष्ट ज्ञान नहीं कर पाते। इसीलिए हमने अलंकारों का वर्णन करते समय गद्य और पद्य दोनों प्रकार के उदाहरण दिये हैं, एक ही वाक्य को भिन्न अलंकारों में प्रदर्शित करके पूर्णरूपेण उसकी भिन्नता का दिग्दर्शन कराया है और अभ्यास आदि के लिए गद्य और पद्य के प्रचुर उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। साथ ही इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि गद्य पद्यों के स्थान में बहुत ही पवित्र भावनाओं से भरे उत्तम और आदर्श छंद बालकों के सम्मुख रहें जिनको कण्ठस्थ करने के लिए वे स्वयं लालायित हो और अलंकारों की विशेषता को जीवन-पर्यन्त न भूलें।

बहुत बातें ऐसी भी हैं जिनकी पुनरावृत्ति द्वितीय भाग में आवश्यक है। परन्तु इस पुनरावृत्ति का ध्येय प्रथम भाग का पिष्टपेषण न होना चाहिए, जैसा कि प्रायः लेखकों ने किया है। उसका प्रयोग केवल नई बातों का ज्ञान कराने के लिए होना चाहिए। हमने यही किया है।

इस पुस्तक का उपयोग करते समय अध्यापक-गण निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें—

१—किसी भी नियम के सिखाने के पूर्व उदाहरणों से आरम्भ

विषय-सूची

अध्याय १

विषय-प्रवेश

हमारे मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं उन्हें हम कैसे प्रकट करते हैं?—बोलकर अथवा लिखकर। यों मानसिक विचारों को प्रकट करने का साधन बोलना या लिखना है। इसी को हम भाषा कहते हैं।

हम अपने मन के विचार दूसरों को बिल्कुल ठीक प्रकार से कैसे प्रकट कर सकते हैं? जब हम ठीक बोलें या ठीक लिखें।

ठीक-ठीक बोलने या लिखने का ज्ञान करानेवाली विद्या व्याकरण है।

कोई मनुष्य बोले तो हमें क्या सुनाई देगा?

मनुष्य की आवाज़।

गाय रँभाये, शेर दहाड़े या कुत्ता भूँके, तो हम क्या सुनेंगे?

उनकी आवाज़।

पत्तियाँ खड़कें, चिड़ियाँ चहचहायें, तो हम क्या सुनेंगे?

उनकी आवाज़।

इस प्रकार कान से सुनाई देनेवाली सभी प्रकार की आवाज़ को ध्वनि अथवा शब्द कहते हैं।

शंख की अथवा अन्य बाजे की ध्वनि सुनकर क्या अर्थ निकलता है?—कुछ अर्थ नहीं निकलता।

जानवरों की बोली से क्या अर्थ लगाया जाता है? कुछ नहीं। मनुष्य जब बोलता है तो क्या अर्थ समझते हो? यही अर्थ कि वह मनुष्य उन शब्दों द्वारा प्रकट करना चाहता है।

ऐसे शब्द जिनका कुछ अर्थ नहीं होता निरर्थक कहलाते हैं और वे शब्द जिनका कुछ अर्थ होता है सार्थक कहलाते हैं।

व्याकरण में केवल सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है
अब कुछ सार्थक शब्दों को लो। हवा, बिजली, पनघट आदि। इ
शब्दों को सुनते समय कौन-कौन सी छोटी ध्वनियों का अनुभ
करते हो ? हवा में ह् + अ + व् + आ, बिजली में ब् + इ
ज् + अ + ल् + ई इत्यादि। ये छोटी-छोटी ध्वनियाँ जिनके वि
टुकड़े नहीं हो सकते अक्षर कहलाती हैं और इन अक्षरों
प्रकट करनेवाले साङ्केतिक चिन्ह वर्ण कहलाते हैं। ऊपर
पनघट शब्द प् + अ + न् + अ + घ् + अ + ट् + अ अक्षरों से ब
है और ये अक्षर लेख में होने के कारण वर्ण कहे जायँगे।

वर्ण जिस रूप में लेख द्वारा प्रकट किये जाते हैं उसे लि
कहते हैं, और हमारी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि
तुम्हारी यह पुस्तक देवनागरी लिपि में छपी हुई है।

अभ्यास

१—भाषा किसे कहते हैं ?
२—व्याकरण की परिभाषा बताओ।
३—शब्द के कितने भेद हैं ? उदाहरण समेत उनकी परिभाषा बताओ।
४—निम्नलिखित वाक्यों में कौन अर्थवाले शब्द कौन हैं ? क्या इनका
प्रयोग पुस्तकों में पाते हो ?—
१—बच्चों के लिए मिठाई पिठाई लेते आना।
२—मैं किताब सिताब नहीं देखना चाहता।
३—राम बात चीत कर रहा है।
४—तीन वर्ष तक अपनी पढ़कर कुछ गिटपिट करने लगते हैं।
५—बच्चा अपना खिलौना तोड़ ताड़ कर रहा है।

अध्याय २

वर्ण-विभाग

अ, इ, उ, ऋ, (लृ) आ, ई, ऊ, (ॠ), (ॡ) ए, ऐ, ओ, औ	क, ख, ग, घ, ङ च, छ, ज, झ, ञ ट, ठ, ड, ढ, ण त, थ, द, ध, न प, फ, ब, भ, म
क्ष, त्र, ज्ञ,	य, र, ल, व, श, ष, स, ह,

ऊपर के दोनों बड़े कोष्ठों के वर्ण पढ़ो।

दूसरे बड़े कोष्ठ के वर्णों के उच्चारण में प्रथम बड़े कोष्ठ के किसी वर्ण की सहायता आवश्यक है? 'अ' की।

प्रथम बड़े कोष्ठ के वर्णों के उच्चारण में किस अन्य वर्ण की सहायता आवश्यक है? किसी वर्ण की नहीं।

जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता के हो सकता है **स्वर** कहलाते हैं और वे वर्ण जो स्वर की सहायता से ही बोले जा सकते हैं **व्यञ्जन** कहलाते हैं।

प्रथम बड़े कोष्ठ में स्वरों की संख्या बताओ। चौदह।

इनमें से छोटे कोष्ठों में दिये हुए लृ, ॠ, ॡ, केवल संस्कृत में प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार हिन्दी में केवल ग्यारह स्वर हैं।

अब प्रथम बड़े कोष्ठ की पहली पंक्ति के चारों स्वरों का उच्चारण करो। फिर उसी कोष्ठ के शेष स्वरों का उच्चारण करो। इनके उच्चारण-काल में क्या अन्तर पाते हो?

प्रथम पंक्ति के स्वरों के उच्चारण में जितना समय लगता है, उससे दूना समय शेष स्वरों के उच्चारण में लगता है। प्रथम पंक्ति के चारों स्वर ह्रस्व (छोटे) कहलाते हैं और शेष जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दूना समय लगता है, दीर्घ (बड़े) कहलाते हैं। ह्रस्व स्वर के उच्चारण में लगनेवाला समय मात्रा कहलाता है। बतलाओ कि दीर्घ स्वर के उच्चारण में कितनी मात्राएँ लगेंगी?

मोटर की भों ३ में, आलाप की आ ३ में, रोते बच्चे की ऊँ ३ में, पुकारने की हो ३ में कितनी मात्राओं का समय लगता है? दो से अधिक। इनको हम प्लुत स्वर कहते हैं।

दूसरे बड़े कोष्ठ के व्यञ्जनों की संख्या बताओ। तैंतीस।

इस कोष्ठ के प्रथम पाँच पंक्तियों में से प्रत्येक में कितने वर्ण पाते हो? पाँच।

प्रत्येक पंक्ति के पाँच वर्णों का समूह वर्ग कहलाता है और प्रत्येक वर्ग का नाम वर्ग के प्रथम अक्षर को जोड़ कर बनता है। इनमें से प्रत्येक वर्ग का नाम बताओ।

क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग और प वर्ग।

क वर्ग के अक्षरों का उच्चारण करने में मुँह के किस भाग से काम लेते हो? कण्ठ से।

च वर्ग के उच्चारण में किस भाग से काम लेते हो?

तालु से।

ट वर्ग के उच्चारण में किस भाग से काम लेते हो ?

मूर्द्धा से।

इसी प्रकार त वर्ग और प वर्ग में ?

दाँत और ओंठ से।

जब हम अपनी जीभ का कोई भाग कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दाँत और ओंठ को स्पर्श करते हैं तभी क वर्ग से प वर्ग तक के अक्षरों का उच्चारण हो पाता है: इसलिये इन्हें स्पर्श वर्ण कहते हैं।

अब श, ष, स, ह, का उच्चारण करो। ये मुँह के किस भाग से बोले जाते हैं ? क्रमशः तालु, मूर्द्धा, दाँत और कण्ठ से।

स्पर्श वर्णों के उच्चारण से इन चारों व्यञ्जनों के उच्चारण में क्या विशेषता पाते हो ? यह कि इनके उच्चारण में वायु विशेष रूप से निकलती है जिसके घर्षण में ऊष्मता (उष्णता) का अनुभव होता है। इसीलिये इन चारों को ऊष्म वर्ण कहते हैं।

स्पर्श तथा ऊष्म वर्णों के बीच में कौन अक्षर रह गये ? य, र, ल, व। ये स्पर्श तथा ऊष्म वर्णों के बीच में हैं, इसलिये इन्हें हम अन्तःस्थ कहते हैं।

अन्तःस्थ वर्णों का उच्चारण करो और बतलाओ कि उनके उच्चारण-स्थान क्या हैं ?

य, र, ल, व के क्रमशः तालु, मूर्द्धा ; दाँत और दाँत+ओंठ।

इसी प्रकार स्वरों का उच्चारण करके उनके स्थान बताओ। हम पाते हैं कि अ, आ कण्ठ से; इ, ई तालु से; उ, ऊ ओंठ से; ऋ, (ॠ) मूर्द्धा से; (ऌ, ॡ) दाँत से; ए, ऐ कण्ठ + तालु से और ओ, औ कण्ठ + ओष्ट से बोले जाते हैं।

नीचे दी हुई तालिका से सभी वर्णों का उच्चारण के अनुसार वर्गीकरण समझो:—

वर्ण	स्थान	भेद
अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह	कण्ठ	कण्ठ्य
इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श	तालु	तालव्य
ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष	मूर्द्धा	मूर्द्धन्य
त, थ, द, ध, न, ल, स	दाँत	दन्त्य
उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म	ओंठ	ओष्ठ्य
ए, ऐ	कण्ठ और तालु	कण्ठतालव्य
ओ, औ	कण्ठ और ओंठ	कण्ठोष्ठ्य
व	दाँत और ओंठ	दन्त्योष्ठ्य

गङ्गा (गंगा), मञ्च (मंच), ठण्डा (ठंडा), कन्धा (कंधा), खम्भा (खंभा)। इन शब्दों का उच्चारण करो और बताओ कि इनमें ङ्, ञ्, ण्, न् और म किस स्थान से बोले जाते हैं ?

परन्तु ङ्, ञ्, ण्, न और म के उच्चारण स्थान क्या पढ़ चुके हो ? क्रमशः कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त और ओंठ। तो मालूम हुआ कि ये वर्ण दूसरे वर्णों के साथ नासिका से बोले जाते हैं और इसीलिये इन्हें सानुनासिक कहना चाहिये।

इन्हीं उदाहरणों में देखो कि पञ्चमाक्षर न लिखकर अन्य कौन सा चिन्ह इसी उच्चारण के लिये प्रयुक्त हुआ है ? अक्षर के ऊपर केवल बिन्दु। इस चिन्ह को अनुस्वार कहते हैं।

संस्कृत के आचार्य अनुस्वार का प्रयोग केवल अन्तःस्थ और ऊष्म वर्णों के पूर्व करते थे, किन्तु हिन्दी के शुभचिन्तक विद्वान् अनुस्वार का प्रयोग सभी व्यञ्जनों के पूर्व वांछनीय मान लिया है

अब नीचे दिये हुए उदाहरणों को पढ़ो:—

नदियाँ, नहीं, बूँद, गईं, चोंच, गोंद, मैदान, किंवाड़, ईंधन,
इन शब्दों के उच्चारणों की तुलना ऊपर दिये हुए अनुस्वारवाले शब्दों के उच्चारणों से करो और बताओ कि क्या अन्तर है ?

यही कि इन के उच्चारण में अनुस्वार की आधी आवाज़ निकलती है। इस अर्ध अनुस्वार को प्रकट करने के लिए बिन्दु (ँ) लगाया जाता है, जिसे चन्द्रबिन्दु कहते हैं।

इन शब्दों को देखो:—ध्यान, पक्का, चद्दर, कलकत्ता, [illegible]।

इन शब्दों के स्वर तथा व्यञ्जन अलग अलग बताओ, और देखो कि जहाँ व्यञ्जन मिलते हैं वहाँ स्वर कहाँ है ?

जहाँ व्यञ्जन परस्पर मिलते हैं वहाँ अन्तिम व्यञ्जन स्वरान्त होता है और उसी स्वर के कारण पहले आये हुए व्यञ्जनों का उच्चारण हो पाता है। ऐसे परस्पर मिले हुए व्यञ्जन संयुक्ताक्षर कहलाते हैं और इनमें स्वर-हीन व्यञ्जन हलन्त कहलाते हैं इनको अलग अक्षर के नीचे हलन्त का चिन्ह (्) लगाकर लिख सकते हैं; जैसे द्‌ष्टान्त, हिन्‌दुस्‌ता।

नीचे कुछ संस्कृत के शब्द दिये जाते हैं जो हिन्दी में हलन्त लिखे जाते हैं:—जगत्, भगवान्, विद्वान्, श्रीमान्, महान्, पृथक्, चतुर्दिक् इत्यादि।

अब अध्याय के आरम्भ में दिये हुए तीनों बड़े कोष्ठ के शब्दों को पढ़ो और समझो कि वे कैसे संयुक्ताक्षर हैं।

[illegible] —इन शब्दों के [illegible]
[illegible] —व्यञ्जनों के
[illegible]
[illegible]

अध्याय ३

हिन्दी भाषा के शब्द

नीचे दिये हुए शब्द व्याकरण के विचार से क्या हैं:—

जगत्, स्वभाव, मोह, काँच, ऋतु, भक्त, देवता, साधु, अवनति, विद्वान्, सर्वथा, कदाचित्, यदि, प्रायः इत्यादि।

ये शब्द किस भाषा से लिये गये हैं? संस्कृत से।

इनका प्रयोग हिन्दी के अपने वाक्यों में करो और बताओ कि उसी भाव के लिये उनके स्थान में विशुद्ध हिन्दी के कौन शब्द रख सकते हो?

कोई अन्य शब्द उनमें से किसी का स्थान नहीं ले सकते। जो शब्द संस्कृत से हिन्दी में आ गये हैं और हिन्दी के ही हो गये हैं उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।

खेत, दूध, नीला, आँसू, तुम, आगे, आज, दही।

इन हिन्दी के शब्दों को पढ़ो और पता लगाओ कि ये किस भाषा के किन शब्दों से बिगड़कर हिन्दी में आ गये हैं?

ये शब्द संस्कृत भाषा के क्षेत्र, दुग्ध, नील, अश्रु, त्वम्, अग्रे, अद्य और दधि शब्दों के विकृत रूप हैं।

जो शब्द संस्कृत शब्दों से विरूप होकर हिन्दी में आ गये हैं उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।

पिंड, भीतर, मुर्गी, चिमटा, गिरना, पहिया, चोटी, लाल, प्यार।

इन शब्दों को बतलाओ कि ये तत्सम हैं या तद्भव?

ये दोनों में से कोई नहीं है।

ये शब्द अन्य भाषाओं से हिन्दी में नहीं आये। इस प्रकार स्थानीय उत्पत्तिवाले हिन्दी भाषा के शब्द देशज कहलाते हैं।

निम्नलिखित शब्दों को देखो और उदाहरण पर ध्यान दो:—
प्रातःकाल, अन्तःपुर, शनैः, प्रायः, छिः छिः, दुःख, अधःपतन
इनमें चिन्ह : का क्या उच्चारण पाते हो?   आधा 'ह' का
इसको किस वर्ण के बाद पाते हो?   स्वर के बाद
इस चिन्ह को विसर्ग कहते हैं और इसका प्रयोग स्वर की सहायता के बिना नहीं होता।

टिप्पणी—हमने अं, अः को शुद्ध स्वर नहीं माना। इसके लिये स्वर की परिभाषा पर विचार करो।

अभ्यास

१—वर्ण कितने प्रकार के हैं? प्रत्येक का स्वभाव बताओ।
२—स्वर कितने हैं और कौन-कौन से?
३—उच्चारण मात्रा के विचार से स्वर कितने प्रकार के हैं? प्रत्येक को उदाहरण सहित समझाओ।
४—वर्ण और अक्षर में भेद बताओ।
५—स्वरों से व्यञ्जनों को क्या लाभ है?
६—स्पर्श वर्ण में कितने अक्षर हैं?
६—अक्षरों के वर्गों से क्या समझते हो? प्रत्येक वर्ग का नाम बताओ।
८—अन्तःस्थ वर्ण कौन से हैं? इनका नाम कैसे पड़ा?
६—इन अक्षरों का स्थान बताओ:—ख, र, व, श, ष, ल, ग
१०—अं, अः शुद्ध स्वर क्यों नहीं हैं?

(अ)	(ब)
बटन, कोट।	सिफारिश, कमीज।
डायरी, पार्सल।	बिल्कुल, गुजर।
स्कूल, माचिस।	ताज्जुब, शायद।
लालटेन, स्टेशन	मंजूरी, खरीदना।

इन दोनों अन्य भाषाओं के शब्द देखो और बताओ कि इनके शुद्ध रूप क्या हैं?

ये शब्द किन भाषाओं से लिये गये हैं?

क्रमश: अंग्रेजी तथा फारसी से।

इस प्रकार अन्य भाषाओं से लाये हुए हिन्दी भाषा के शब्द विदेशज कहे जाते हैं।

ऐसे पचास शब्दों की सूची बनाओ जो विदेशज हों।

(अ)	(ब)	(स)
जल	गंगाजल, जलधारा	जलज
फल	फलहारी	त्रिफला
उदर	उदरानल	वृकोदर, लम्बोदर
महल	राजमहल महलमित्र	ताजमहल

ऊपर के अ, ब और स विभागों के शब्दों को देखो और बताओ कि अ विभाग के शब्दों के खण्ड करने पर उन खण्डों के क्या अर्थ होंगे?

जल के अलग खण्डों का पृथक् पृथक् कोई अर्थ नहीं।

ये अ विभाग के शब्द किन अन्य शब्दों से बने हैं?

इनकी सत्ता स्वतन्त्र है।

ब विभाग के शब्द किन शब्दों से बने हैं और उनके क्या अर्थ हैं?

गंगा, एक नदी का नाम, उसका जल अर्थात् पानी—गंगा का पानी इत्यादि।

अ तथा ब विभागों के शब्दों में क्या अन्तर पाते हो ?

यह कि अ विभाग के शब्दों का खण्ड किये जाने पर कुछ अर्थ नहीं होता और ये दूसरे शब्दों के योग से नहीं बने। ब विभाग के शब्द अन्य अर्थपूर्ण शब्दों के योग से बने हैं।

ऐसे शब्द जो किसी के योग से नहीं बने रूढ़ि शब्द कहे जाते हैं और वे शब्द जो अन्य शब्दों के योग से बनकर अपनी सत्ता रखते हैं यौगिक कहलाते हैं।

अब स विभाग के शब्दों के अर्थ बताओ।

जलज अर्थात् जल में पैदा होनेवाला (मगर या सेवार नहीं, बल्कि केवल) कमल।

त्रिफला अर्थात् तीन फल (आम, केला, सेब नहीं, बल्कि केवल) हर्रा, बहेड़ा, आँवला इत्यादि।

ब तथा स विभाग के यौगिक शब्दों में क्या अन्तर पाते हो ?

यही कि स विभाग के शब्दों के अर्थ विशेषरूप से निश्चित हो गये हैं और उन के अर्थ खण्डों के योग से नहीं बल्कि समग्र शब्द से जाने जाते हैं। ऐसे शब्द योगरूढ़ि कहे जाते हैं।

ऐसे योगरूढ़ि शब्दों के दस उदाहरण दो जो पढ़ चुके हो और उनके अर्थ बताओ।

अभ्यास

१—उत्पत्ति के विचार से शब्द कितने प्रकार के हैं? प्रत्येक की परिभाषा और उदाहरण दो।

२—यौगिक तथा योगरूढ़ि शब्दों में क्या अन्तर है ?

३—विदेशज शब्दों के आ जाने से भाषा पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

४—नीचे के शब्दों को बताओ कि वे कैसे हैं :—

गोशाला, पीसरा, मुठभेड़, पीताम्बर, दुर्जन, जलधि, खघर, चक्रपाणि।

अध्याय ४

सन्धि

(अ)

१ { (क) महा+ईश = महेश
  (ख) अति+अधिक = अत्यधिक

२ { (क) दिक्+अम्बर = दिगम्बर
  (ख) दिक्+गज = दिग्गज

३ { (क) मनः+हर = मनोहर
  (ख) निः+उत्साह = निरुत्साह

ऊपर के शब्दों पर विचारकर बतलाओ कि उनके खण्डों के किन वर्णों में परस्पर मेल किया गया है ?

इस मेल का क्या परिणाम होता है ? मिलनेवाले वर्णों में, एक या दोनों के रूप बदल जाते हैं।

इस प्रकार रूप बदलते हुए दो वर्णों के परस्पर मि जाने को सन्धि कहते हैं।

ऊपर के १ उदाहरण—खण्ड में किस प्रकार के वर्णों सन्धि हुई है ? स्वरों में

जब दो स्वरों में परस्पर सन्धि होती है तो उ स्वरसन्धि कहते हैं।

ऊपर के २ उदाहरण—खण्ड में सन्धि करनेवाले वर्ण कि प्रकार के हैं ?

(क) में व्यञ्जन+स्वर और (ख) में व्यञ्जन+व्यञ्जन।

जब किसी व्यञ्जन की अन्य स्वर अथवा व्यञ्जन स सन्धि होती है तो उसे व्यञ्जनसन्धि कहते हैं।

ऊपर के ३ उदाहरण—खण्ड में किस प्रकार के वर्णों में सन्धि हुई है ?

(क) में विसर्ग+व्यञ्जन और (ख) में विसर्ग+स्वर की।

जब विसर्ग को व्यञ्जन अथवा स्वर से सन्धि हो तो उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं।

(आ)

१
- धर्म+अर्थ = धर्मार्थ
- पुस्तक+आलय = पुस्तकालय
- विद्या+अधिकारी = विद्याधिकारी
- विद्या+आलय = विद्यालय

२
- क्षिति+इन्द्र = क्षितीन्द्र
- गिरि+ईश = गिरीश
- मही+इन्द्र = महीन्द्र
- नदी+ईश = नदीश

३
- भानु+उदय = भानूदय
- लघु+ऊर्मि = लघूर्मि
- वधू+उत्सव = वधूत्सव
- वधू+ऊढ़ा = वधूढ़ा

ऊपर के उदाहरणों में बताओ कि कौन ह्रस्व या दीर्घ स्वर किन ह्रस्व या दीर्घ स्वरों से सन्धि करते हैं और उनके क्या रूप हो जाते हैं ?

१ उदाहरणमाला में ह्रस्व या दीर्घ अकार के मिलने पर दीर्घ आकार बन जाता है।

२ उदाहरणमाला में ह्रस्व या दीर्घ इकार के परस्पर सन्धि करने पर दीर्घ ई बन जाती है।

३ उदाहरणमाला में ह्रस्व या दीर्घ उ का योग होने पर दीर्घ ऊ हो जाता है।

सो सीखा कि **ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ के साथ**

समान ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर मिलने पर दीर्घ स्वर जाता है।

१ | देव + इन्द्र = देवेन्द्र
महा + इन्द्र = महेन्द्र
देव + ईश = देवेश
उमा + ईश = उमेश

२ | सूर्य + उदय = सूर्योदय
गंगा + उदक = गंगोदक
जल + ऊर्मि = जलोर्मि
यमुना + ऊर्मि = यमुनोर्मि

३ { सप्त + ऋषि = सप्तर्षि
राजा + ऋषि = राजर्षि

इन उदाहरणों में कौन ह्रस्व या दीर्घ स्वर किन ह्रस्व या दीर्घ स्वरों से सन्धि करते हैं और उनके क्या रूप हो जाते हैं?

१ उदाहरणमाला में ह्रस्व और दीर्घ अकार की सन्धि ह्रस्व और दीर्घ इकार से हुई है।

२ उदाहरणमाला में ह्रस्व और दीर्घ अकार की सन्धि ह्रस्व और दीर्घ उकार से हुई है।

३ उदाहरणमाला में ह्रस्व और दीर्घ अकार की सन्धि ऋ से हुई है। और इनमें क्रमशः ए, ओ तथा अर् रूप बन गये हैं।

तो सीखा कि ह्रस्व या 'दीर्घ अकार के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, हो या ऋ हो तो वे मिलकर क्रमशः ए, ओ तथा अर् बन जाते हैं।

१ | एक + एक = एकैक
स्वर्ग + ऐश्वर्य = स्वर्गैश्वर्य
सदा + एव = सदैव
महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

२ | शीत + ओषधी = शीतौषधी
वन + औषध = वनौषध
महा + ओघ = महौघ
महा + औषध = महौषध

ऊपर के उदाहरणों में देखो कि किन ह्रस्व या दीर्घ स्वरों से कौन ह्रस्व या दीर्घ स्वर मिलते हैं और उनके क्या रूप हो जाते हैं?

१ उदाहरणमाला में ह्रस्व और दीर्घ अकार के बाद 'ए' या '[illegible]' हैं, और सन्धि होने पर वे 'ऐ' में बदल जाते हैं।

२ उदाहरणमाला में ह्रस्व और दीर्घ अकार के बाद 'ओ' या 'औ' हैं, तो सन्धि होने पर ये 'औ' में बदल जाते हैं।

तो सीखा कि ह्रस्व या दीर्घ अकार के बाद 'ए' या 'ऐ' हो तो 'ऐ' और 'ओ' या 'औ' हो तो 'औ' सन्धि करने पर हो जाते हैं।

१
- यदि + अपि = यद्यपि
- इति + आदि = इत्यादि
- देवी + अर्थ = देव्यर्थ
- देवी + आगम = देव्यागम

२
- प्रति + उपकार = प्रत्युपकार
- नि + ऊन = न्यून
- गोपी + उक्त = [illegible]
- नदी + ऊर्मि = [illegible]

३
- मनु + अन्तर = मन्वन्तर
- सु + आगत = स्वागत
- सरयू + अम्बु = सरय्वम्बु
- वधू + आगमन = वध्वागमन

४
- अनु + इत = [illegible]
- अनु + [illegible] = [illegible]
- अनु + [illegible] = [illegible]
- वधू + [illegible] = [illegible]

५
- पितृ + अनुमति = पित्रनुमति
- मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा
- भ्रातृ + ईक्षण = भ्रात्रीक्षण
- कर्तृ + उपहार = कत्रुपहार
- मातृ + ऊरु = मात्रूरु

ऊपर के उदाहरणों में किन [illegible] सन्धि हुई है, और उनके क्या [illegible]

१ और २ उदाहरणमालाओं [illegible] सन्धि अपने से भिन्न स्वरों [illegible]

३ और ४ उदाहरणमालाओं [illegible] सन्धि अपने से भिन्न स्वरों [illegible]

तो सीखा कि यदि क् के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ अथवा ग्, घ्, ज्, झ्, द्, ध्, ब्, भ्, य्, र्, ल्, व्, या ह्, हो तो 'क्' का 'ग्' हो जाता है।

१ | प्राक् + मुख = प्राङ्मुख
  | दिक् + नाग = दिङ्नाग

२ | बृहत् + माल = बृहन्माल
  | जगत् + नाथ = जगन्नाथ

ऊपर के शब्दों में किन वर्णों के साथ सन्धि हुई है? क् तथा त् के साथ।

किन वर्णों से इनकी सन्धि हुई? 'न्, म्' से।

सन्धि होने पर 'क्' तथा 'त' के क्या रूप हो जाते हैं? क्रमशः 'ङ्' तथा 'न'।

तो सीखा कि यदि 'क्' अथवा 'त' के बाद 'म्' या 'न्' हो तो क्रमशः 'ङ्' और 'न्' हो जाते हैं।

१
उत् + अय = उदय
सत् + आनन्द = सदानन्द
भगवत्+इच्छा=भगवदिच्छा
जगत् + ईश = जगदीश
सत् + उदय = सदुदय
बृहत् + ऊखल = बृहदूखल

२
उत् + गम = उद्गम
उत् + घाटन = उद्घाटन
उत् + दीपन = उद्दीपन
सत् + धर्म = सद्धर्म
भगवत् + बल = भगवद्बल
भगवत्+भक्ति=भगवद्भक्ति
उत् + यान = उद्यान
तत् + रूप = तद्रूप
भविष्यत्+वक्ता=भविष्यद्वक्ता

ऊपर के उदाहरणों में सन्धि [illegible]
'त्'। इसके बाद में आनेवाले वर्ण [illegible]

१ उदाहरणमाला में [illegible]

२ उदाहरणमाला में [illegible]

३ उदाहरणमाला में य्, र और व्।

सन्धि करने पर 'त्' का क्या रूप हो जाता है? 'द्'।

तो सीखा कि 'त्' के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर
अथवा ग्, घ्, द्, ध्, ब्, भ्, य्, र्, व्, में से को
वर्ण हो तो 'त्' का 'द्' हो जाता है।

१ { उत्+ज्वल = उज्ज्वल
  { सत्+जन = सज्जन

२ { उत्+लास = उल्ल
  { तत्+लीन = तल्ल

ऊपर के उदाहरणों में सन्धि करनेवाला प्रथम वर्ण कौन
'त्'। इसकी सन्धि किन वर्णों से हुई है? 'ज्' अथवा 'ल्'
सन्धि के बाद 'त्' का क्या रूप पाते हो? क्रमशः 'ज्' के
'ज्' और 'ल्' के साथ 'ल्' हो जाता है।

तो सीखा कि 'त्' के परे 'ज्' या 'ल्' हो तो स
करने पर क्रमशः 'ज्' और 'ल्' बन जाता है।

१ { उत्+हरण = उद्धरण
  { तत्+हित = तद्धित
  { सुहृत्+हृदय = सुहृद्धृदय

२ { उत्+चारण = उच्चार
  { शरत्+चन्द्र = शरच्च
  { महत्+छत्र = महच्छ

३ { सत्+शास्त्र = सच्छास्त्र
  { उत्+शिष्ट = उच्छिष्ट

ऊपर के उदाहरणों में सन्धि करनेवाला प्रथम वर्ण क्या
'त्'। इसकी किन वर्णों के साथ सन्धि हुई है?

१ उदाहरणमाला में 'ह्' के साथ।

२ उदाहरणमाला में 'च्' या 'छ्' के साथ।

३ उदाहरणमाला में 'श्' के साथ।

सन्धि होने पर क्या रूप परिवर्तन हुए हैं?

१ उदाहरणमाला में 'त्' का 'द्' और 'ह्' का 'ध्'
गया है।

२. उदाहरणमाला में 'त' का 'च्' हो गया है। और ३ उदाहरणमाला में 'त' का 'च्', और 'श्' का 'छ्' हो गया है।

तो सीखा कि 'त्' के परे यदि 'ह्' हो तो 'त्' का 'द्' और 'ह्' का 'ध्' हो जाता है। 'त्' के परे 'च्' या 'छ्' हो तो 'त्' का 'च्' हो जाता है। और 'त्' के परे 'श्' हो तो 'त्' का 'च्' और 'श्' का 'छ्' हो जाता है।

शरीर + छेद = शरीरच्छेद
परि + छेद = परिच्छेद
चक्षु + छेदन = चक्षुच्छेदन

ऊपर के उदाहरणों में सन्धि करनेवाला प्रथम अक्षर क्या है? ह्रस्व स्वर।

ह्रस्व स्वर के बाद कौन वर्ण है? 'छ्'।

सन्धि होने पर क्या रूप बनता है? 'छ्' को 'च्छ' कर देते हैं।

तो सीखा कि ह्रस्व स्वरों के साथ 'छ्' की सन्धि होने पर 'च्छ्' हो जाता है।

(ङ)

१ { निः + चल = निश्चल
  { निः + छिद्र = निश्छिद्र

२ { धनुः + टङ्कार = धनुष्टङ्कार
  { निः + ठुर = निष्ठुर

३ { मनः + ताप = मनस्ताप
  { अन्तः + तल = अन्तस्तल

विसर्ग के बाद कौन वर्ण है? च्, छ्, ट्, ठ् अथवा त।

सन्धि होने पर विसर्ग का क्या रूप हो जाता है? च् और छ के पहले श्, ट् और ठ के पहले ष् और त के पहले स्।

तो सीखा कि विसर्ग के बाद 'च्' और 'छ्' हो

'ट्' और 'ठ्' हो तो 'ष्' और 'त्' हो तो 'स्' हो जा

दुः + शासन = दुश्शासन
निः + सन्देह = निस्सन्देह
दुः + षड्यन्त्र = दुष्षड्यन्त्र

विसर्ग की सन्धि किन वर्णों से हुई है ? श्, ष्,
विसर्ग की सन्धि होने पर क्या रूप पाते हो ? श्, ष्
जाता है।

तो सीखा कि यदि विसर्ग के बाद श्, ष्, स्
कोई वर्ण हो तो सन्धि होने पर विसर्ग का
श्, ष्, स् हो जाता है।

दुः + कर्म = दुष्कर्म
निः + कपट = निष्कपट
निः + फल = निष्फल
निः + खण्ड = निष्खण्ड
निः + खड्ग = निष्खड्ग
दुः + खनन = दुष्खनन
चतुः + फल = चतुष्फल
निः + पाप = निष्पाप
दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति

विसर्ग के पहले कौन स्वर है ? इ अथवा उ।
विसर्ग के बाद कौन वर्ण है ? क्, ख्, प्, या फ्।
विसर्ग का क्या रूप पाते हो ? विसर्ग का 'ष्' बन जाता है
तो सीखा कि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' हो और बा

: क्, ख्, प्, या फ् हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है।

निः+रस=नीरस निः+रोग=नीरोग

ऊपर के उदाहरणों से सीखो कि विसर्ग के पहले 'इ' और बाद में 'र' हो तो विसर्ग का लोप होकर दीर्घ 'ई' हो जाती है।

१
- नि+अग्नि=निरग्नि
- दुः+अवतार=दुरवतार
- निः+आपद=निरापद
- दुः+आशा=दुराशा
- निः+इच्छ=निरिच्छ
- हरिः+इति=हरिरिति
- निः+ईह=निरीह
- निः+ईक्षण=निरीक्षण
- निः+उत्तर=निरुत्तर
- दुः+ऊह=दुरूह

२
- निः,दुः+गुण=निर्गुण, दुर्गुण
- निः+घोष=निर्घोष
- दुः+घटना=दुर्घटना
- निः,दुः+जन=निर्जन,दुर्जन
- निः+झर=निर्झर
- दुः+झर=दुर्झर
- निः+डिम्भ=निर्डिम्भ
- दुः+डमरु=दुर्डमरु
- निः+ढकार=निर्ढकार
- दुः+ढक्का=दुर्ढक्का

- निः+दय=निर्दय
- निः+धन=निर्धन
- दुः+धर्ष=दुर्धर्ष
- धनुः+धर=धनुर्धर
- निः+बल=निर्बल
- आयुः+बल=आयुर्बल
- निः+भय=निर्भय
- दुः+भाग्य=दुर्भाग्य
- प्रादुः+भाव=प्रादुर्भाव

३
- निः+नय=निर्णय
- दुः+नट=दुर्नट
- निः+मल=निर्मल
- दुः+मति=दुर्मति

४
- निः+याण=निर्याण
- दुः+यति=दुर्यति
- निः+लोभ=निर्लोभ
- दुः+लभ=दुर्लभ
- निः+वंश=निर्वंश
- दुः+वचन=दुर्वचन
- निः+होम=निर्होम
- दुः+हृदय=दुर्हृदय

इन उदाहरणों में विसर्ग के पूर्व कौन स्वर है? 'इ' या 'उ'। बाद में कौन वर्ण हैं? १ उदाहरणमाला में स्वर, २ उदाहरणमाला में वर्गों के तृतीय अथवा चतुर्थ अक्षर, ३ उदाहरणमाला में न अथवा म, और ४ उदाहरणमाला मे य, ल, व, ह।

सन्धि होने पर विसर्ग का क्या रूप पाते हो? विसर्ग का 'र' बन जाता है।

तो सीखा कि यदि इ अथवा उ के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के अनन्तर स्वर, वर्ग का तृतीय या चतुर्थ अक्षर, न, म, य, ल, व अथवा ह हो तो विसर्ग का 'र' बन जाता है।

१
- यशः + गान = यशोगान
- यशः + घटी = यशोघटी
- मनः + ज = मनोज
- मनः + दर्पण = मनोदर्पण
- यशः + धन = यशोधन
- नमः + नम = नमोनम
- यशः + भक्त = यशोभक्त
- नभः + मण्डल = नभोमण्डल

२
- मनः + योग = मनोयोग
- मनः + रञ्जन = मनोरञ्जन
- नमः + लालिमा = नमोलालिमा
- मनः + वृत्त = मनोवृत्त
- मनः + हर = मनोहर

विसर्ग के पूर्व कौन अक्षर है?

बाद में कौन वर्ण हैं ?   ग्, घ्, ज्, द्, ध्, न्, भ्, म्, अन्तःस्थ अथवा ह्।

सन्धि होने पर विसर्ग का क्या रूप हो जाता है ?

विसर्ग का 'ओ' बन जाता है।

तो सीखा कि यदि विसर्ग के पूर्व अ हो और बाद में ग्, घ्, ज्, द्, ध्, न्, भ्, म्, अन्तःस्थ अथवा ह् हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है।

अभ्यास

१—सन्धि किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद हैं ? प्रत्येक के उदाहरण देकर बताओ।

२—निम्नलिखित सन्धियाँ तोड़ो और वे नियम बताओ जिनके अनुसार ये बनी हैं:—ईश्वरेच्छा, सर्पागार, विद्यार्थी, देव्युपहार, अत्यावश्यक, चिदानन्द, भगवद्रूप, बृहल्लाल, भगवल्लीन, बृहच्छास्त्र, दिग्घोष, अन्तस्थल, निराधार, मनोविकार।

३—नीचे लिखे शब्दों को सन्धि के नियमों के अनुसार मिलाओ।

प्रति + एक, देव + आलय, बृहत् + चन्द्र, भगवत् + उदय, नदी + उद्गम, यमुना + उदक, राहु + उदय, धन + इच्छा।

अध्याय ५

प्रत्यय कृदन्त

(क)

पाठ्य पुस्तक, पालन कर्त्ता, सिद्धहस्त, लिखित खिलाड़ी, होनहार, पढ़ाई, चलन, मिलाप ।

ऊपर के पड़े अक्षरवाले शब्दों के अर्थ बताओ । क्रमशः योग्य, करनेवाला, सधा हुआ, लिखा हुआ, खेलनेवाला, होनेवाला पढ़ने का काम या धर्म, चलने का ढंग, मिलने की क्रिया ।

ये सभी शब्द किन-किन क्रियाओं से सम्बन्ध रखते क्रमशः पढ़ना, करना, साधना, लिखना, खेलना, होना, प चलना और मिलना ।

ये शब्द व्याकरण के अनुसार क्या हैं ? विशेषण अ संज्ञाएँ । इस प्रकार क्रियाओं से बननेवाले संज्ञा और विशे शब्द कृदन्त कहलाते हैं ।

(ख)

१—रखनेवाला, पढ़नेवाला, गानेवाला ।

२—मरनहार, होनहार, टूटनहार ।

३—गवैया, खवैया, रखैया, लिखैया ।

४—धुनिया, निवारिया, बनिया, जड़िया ।

५—लड़ाका, पढ़ाका, तैराक, पैराक ।

६—घुमक्कड़, बनक्कड़, पियक्कड़, भुलक्कड़ ।

…या का करनेवाला क्या कहलाता है ? कर्ता।

…ऊपर क्रियाओं से कर्तावाचक रूपों के बनने में क्या जोड़ा
…है ?

…वाला, हार, ऐया, या, वैया, इया, आक या आका और अक्कड़।
…जुड़नेवाले शब्द प्रत्यय कहलाते हैं। ऊपर के दिये हुए प्रत्यय
…र्तृवाचक कृदन्त शब्द कहलायेंगे।

(ग)

१—पढ़ा हुआ, गोदा हुआ, गूँथी हुई।

२—बिछौना, ओढ़ना, सुँघनी, चटनी।

ऊपर के शब्दों को देखो और बताओ कि जिन क्रियाओं से
ने हैं उनसे इनका क्या सम्बन्ध है ? ये जिन क्रियाओं से बने
उनके कर्म हैं। ऐसे शब्द कर्मवाचक कृदन्त कहलाते हैं।

ये कर्म-वाचक कृदन्त किन-किन प्रत्ययों के योग से बने हैं ?

१ में क्रिया के सामान्य भूत में 'हुआ' या 'हुई' जोड़कर।

२ में 'ना' या 'नी' जोड़कर।

(घ)

१—चलनी, धौंकनी, कतरनी।

२—छुरा, ढकना, बेलना, पोछना।

३—बुहारी, झाड़ू।

ऊपर के कृदन्त शब्द क्रियाओं से क्या सम्बन्ध रखते हैं ?
यह कि ये क्रियाओं के साधन हैं।

साधन का अर्थ किस कारक से जाना जाता है ? करण से।

ये करणवाचक कृदन्त कहलाते हैं, क्योंकि ये क्रियाओं के साधन
हैं। इनमें लगनेवाले प्रत्ययों को अपने आप समझो।

(ङ)

दुहनी, बस्ती, बैठक, आसानी, छावनी, मूला।
ऊपर के कृदन्त शब्द क्रियाओं से क्या सम्बन्ध रखते
ये क्रिया के आधार (अर्थात् अधिकरण)

ऐसे शब्द अधिकरण-वाचक कृदन्त कहलाते हैं।

(च)

१—मार, पुकार, पीट, छूट, जाँच।
२—घुमाव, चढ़ाव, चुनाव, पहिराव, चढ़ाव।
३—बुलावा, भुलावा, पहिनावा, चढ़ावा।
४—लड़ाई, चढ़ाई, मिचाई।
५—बनावट, सजावट, थकावट, घबड़ाहट, मुस्कराहट
६—लिखना, पढ़ना, खाना, पीना, सोना।
७—चलन, मिकुड़न, जलन, ऐंठन।
८—घुड़की, हँसी, बोली, ठिठोली, धमकी।
९—त्याग, उपास, छूत, भरती, गिनती, बिनती, क
मेल, मिलाप, गठन्न, उड़ान, थकान।

ऊपर के शब्द कैसी संज्ञाएं हैं? भाववाच
ये किन क्रियाओं और प्रत्ययों से बने हैं, ऊपर के उदाह
से समझो। इन्हें भाववाचक कृदन्त कहते हैं।

धक्कामुक्की, देखादेखी, मारपीट, मिलमिलाप, खानपान,
छीनछान, छुड़ाछुड़ी, आनाजाना, छुआछूत।

ये संज्ञाएँ कैसी हैं? भाववा

इन शब्दों की बनावट में क्या विशेषता है? एक
ही क्रिया दुहरा दी गई है; अथवा, स्थानि अनुरणात्मक या
भिन्न क्रिया दुहरा दी गई है। ये भी भाववाचक कृदन्त हैं।

अध्याय ६

प्रत्यय—तद्धित

माली, तेली, सुनार, लुहार, टोपीवाला, रेवड़ीवाला, चड़ी-ज, जिल्दसाज़, [illegible], प्रयागवाल, [illegible], मिठास।

ऊपर के शब्द क्या हैं? संज्ञाएं अथवा विशेषण।

ये किन शब्दों से बने हैं? वे शब्द व्याकरण में क्या हैं?

माला से माली, तेल से तेली, सोना से सुनार, इत्यादि।

माला, तेल, सोना आदि सभी शब्द संज्ञाएँ हैं।

इस प्रकार संज्ञा अथवा विशेषण शब्दों से बननेवाले संज्ञा और विशेषण तद्धित कहलाते हैं।

(क)

१—आमवाला, मोटरवाला, मिठाईवाला, पकौड़ीवाला।

२—लकड़हारा, मनिहार, चुड़िहार, घसियारा, भटियारा।

३—मखनिया, घाटिया, लँगोटिया, अढ़तिया।

४—मुँगौरी, कुम्हड़ौरी, दनौरी।

५—कंठी, अँगूठी, पहुँची।

६—ननिहाल, ससुराल, पीहर, नैहर।

७—खिलाड़ी, जुआड़ी, गंजेड़ी, भँगेड़ी, शराबी।

ऊपर के शब्द किन संज्ञा शब्दों से बने हैं?

आम, मोटर, लकड़ी, मक्खन इत्यादि।

ऊपर के शब्द किन प्रत्ययों के लगाने से बने हैं?

वाला, हारा, इया, औरी, ई, आल, ड़ी इत्यादि।

इन प्रत्ययों के लगाने से इन संज्ञाओं के अर्थ में क्या विशेषता आ गई है?

६—वन्दना, प्रार्थना, धारणा, भावना।
७—गति, मति, रति, शक्ति, बुद्धि, शुक्ति, मुक्ति, सिद्धि
८—घार, पाठ, क्रोध, बोध, (वि) रोध, योग, भोग,
ऊपर के शब्द किस प्रकार की संज्ञाएँ हैं? भाव
ये किस भाषा के शब्द हैं? संस्कृत के
उदाहरणों से समझो कि ये भाववाचक कृदन्त किन
से बने हैं।

अभ्यास

१—प्रत्यय किसे कहते हैं?
२—कृदन्त से क्या समझते हो?
३—तुमने कितने प्रकार के कृदन्त पढ़े हैं? प्रत्येक के
हरण दो।
४—कृदन्त प्रत्ययों के योग से बने हुए विशेषण क्या कहलाते
चार उदाहरण इस प्रकार के दो।
५—ऐसी भाववाचक संज्ञाओं के दस उदाहरण दो जो कृ
प्रत्ययों से बनी हों।
६—जानहार, लड़ैया, रखवाला, [illegible] कृदन्त हैं? इन
क्रियाएँ तथा प्रत्यय बताओ।
७—कर्मवाचक तथा [illegible]
उदाहरण दो और बतलाओ [illegible] पाँच-पाँ
८—लिखना, पढ़ना, [illegible] बने हैं
जितने भी शब्द कृदन्त [illegible]
और [illegible]
९—[illegible]

अध्याय ६

प्रत्यय—गठन

माली, तेली, सुनार, लुहार, हाथीवाला, रेलगाड़ीवाला, पढ़ी-गाम, निल्हगाम, अग्रवाल, प्रयागवाल, ब्रह्मभाट, सिकदार।

ऊपर के शब्द क्या हैं? संज्ञाएँ अथवा विशेषण।

ये किन शब्दों से बने हैं? ये शब्द व्याकरण से क्या हैं?

माला से माली, तेल से तेली, सोना से सुनार, इत्यादि।

माला, तेल, सोना आदि सभी शब्द संज्ञाएँ हैं।

इस प्रकार संज्ञा अथवा विशेषण शब्दों से बननेवाले संज्ञा और विशेषण तद्धित कहलाते हैं।

(५)

१—आगवाला, मोटरवाला, मिठाईवाला, पकौड़ीवाला।

२—लकड़हारा, मनिहार, चुड़िहार, घसियारा, भटियारा।

३—मखनिया, घाटिया, लँगोटिया, बादलिया।

४—मुँगौरी, कुम्हड़ौरी, दनौरी।

५—कंठी, अँगूठी, पहुँची।

६—ननिहाल, ससुराल, पीहर, नैहर।

७—खिलाड़ी, जुआड़ी, गंजेड़ी, भँगेड़ी, शराबी।

ऊपर के शब्द किन संज्ञा शब्दों से बने हैं?

आग, मोटर, लकड़ी, मक्खन इत्यादि।

ऊपर के शब्द किन प्रत्ययों के लगाने से बने हैं?

वाला, हारा, इया, औरी, ई, आल, ड़ी इत्यादि।

इन प्रत्ययों के लगाने से इन संज्ञाओं के अर्थ में क्या विशेषता आ गई है?

उन संज्ञाओं से सम्बन्ध रखनेवाले सम्बन्धी का बोध होने लगा है। इसीलिये इन्हें सम्बन्धवाचक तद्धित कहते हैं।

(ख)

१—सुतली, टिकली, बटुली।

२—पहाड़ी, टँगड़ी, चमड़ी, चमची, थाली, रस्सी, डोलची मढ़ी।

३—डिबिया, खटिया, मचिया, मँडिया।

४—कोठरी, गठरी, टटरी, छतरी।

ऊपर के शब्द किन संज्ञा शब्दों से बने हैं?

सूत, टीका, बटुआ, पहाड़ इत्यादि से।

किन प्रत्ययों से शब्द बने हैं?

ली, ड़ी, ई, इया, री, आदि

प्रत्ययों के लगाने पर संज्ञाओं के अर्थ में क्या विशेषता गई है?

यही कि छोटे का बोध होता है।

इसीलिये इन्हें लघुतावाचक तद्धित कहते हैं।

(ग)

लड़कपन, बचपन, मिठाई, खटाई, कालापन।

कड़वाहट, लाली, महँगाई।

मिठास, खटास।

ऊपर के शब्द कौन सी संज्ञा है? भाववाचक

ये किन संज्ञाओं अथवा विशेषणों से बने हैं?

भाववाचक संज्ञाएं बनाने के प्रत्यय बताओ।

(घ)

हथिनी, साँपिन, चौबाइन, अध्यापिका, नदी।

ऊपर के शब्द किस लिंग के हैं? स्त्री लिंग

न पुंलिङ्ग शब्दों से बने हैं ? हाथी, साँप, चौबे,
ओर नद।

लगनेवाले प्रत्ययों को समझो। ये स्त्री-प्रत्यय
हैं।

(ङ)

सया, रसीला, सरदार, रंगीला, रंगिया, पेटू, गूखा, घना-
देशी, सूती, ऊनी, विलायती, बजारू, लगनौआ, दमैया,
तिया, सुनहरा, कपटला।

ऊपर के शब्द क्या हैं ? विशेषण।

ये किन शब्दों से बनते हैं ? रस, रंग, पेट आदि।

यों संज्ञा शब्दों से विशेषण का अर्थ देनेवाले तद्धित बनते
हैं जिन्हें हम गुणवाचक कहेंगे। ऊपर के उदाहरणों से इनमें लगे
हुए प्रत्ययों को समझो।

(च)

१—बुद्धिमान्, मतिमान्, श्रीमान्, विद्वान्, धनवान्,
भगवान्।

२—बुद्धिमती, श्रीमती, भगवती।

३—क्षुधित, तृषित, मोहित।

४—मासिक, मानसिक, दैविक, दैहिक, भौतिक, दैनिक,
वार्षिक, नागरिक, आत्मिक।

५—दयालु, कृपालु, ग्राम्य, वन्य, देशीय, स्थानीय, राजकीय,
नाटकीय, स्वर्गीय।

ऊपर के शब्द क्या हैं ? विशेषण।

ये किस भाषा के हैं ? संस्कृत के।

जिन शब्दों से बने हैं उन पर ध्यान दो और सोचो कि
इनमें किन प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है।

वाच

लिंग के

बताओ इन्हें किस प्रकार के तद्धित शब्द कहोगे ?
१—वैष्णव, शैव, शाक्त ।
२—दाशरथि, वासुदेव, सौमित्रि, द्रौपदी ।
३—कैकेयी पार्वती, पाञ्चाली ।
ऊपर के शब्दों के अर्थों पर ध्यान दो ।
ये किस भाषा के शब्द हैं ?   ये भी संस्कृत के श[...]
ऐसी भाववाचक संज्ञाएँ बताओ जो त्व, ता प्रत्[...]
बनी हों ।
महत्त्व, गुरुत्व, लघुता, महत्ता आदि ।
इन संस्कृत शब्दों के प्रत्ययों को भी सीखो:—
धैर्य, स्थैर्य, शौर्य, सौन्दर्य, वीर्य, वैर, लालित्य, [...]
इत्यादि ।

अभ्यास

१—तद्धित किसे कहते हैं ?
२—निम्नलिखित शब्द किन प्रत्ययों के योग से बने हैं और [...] हैं—खोमचेवाला, हाटवा, बनारसी, हरियाली, बजनिया, न[...] इडा, रँडापा, गरमाहट, हजाई, दरियाई, कँटीला ।
३—लघुतावाचक तद्धित से क्या समझते हो ? उदाहरण देकर ब[...]
४—स्त्री-प्रत्यय से क्या समझते हो ? उदाहरण देकर बताओ ।
५—किन तद्धित प्रत्ययों के योग से भाववाचक संज्ञाएँ बनाते हो[...] उदाहरण समेत बताओ ।
६—तद्धित प्रत्ययों से बने हुए विशेषण क्या कहलाते हैं ?
७—कुछ ऐसे उदाहरण दो जो संस्कृत भाषा के शब्दों से तद्धित [...] लगाकर बने हों ।

अध्याय ७

समास

(अ)

माता-पिता   रघुवंशभूषणचरित्र   प्रतिदिन

चतुरानन   त्रिलोक

इन शब्दों पर विचार करो और बतलाओ:—

विद्यालय शब्द का क्या अर्थ है ?   पढ़ने की जगह, विद्या का स्थान।

यह किन शब्दों का समावेश है ?   विद्या और आलय।

विद्या और आलय शब्द किस कारक से युक्त हैं ?   सम्बन्धकारक के 'का' चिह्न से।

'विद्यालय' शब्द में सम्बन्धकारक का 'का' चिह्न कहाँ गया ?   लोप हो गया।

'माता-पिता' शब्द का क्या अर्थ है ?   माता और पिता।

'माता-पिता' में 'और' अव्यय कहाँ गया ?   लोप हो गया।

यह कितने शब्दों से बना है ?   दो शब्दों से।

रघुवंशभूषणचरित्र शब्द का क्या अर्थ है ?   रघु के वंश के भूषण (अर्थात रामचन्द्र) का चरित्र।

इसमें कितने कारकवाले शब्द हैं ?   चार (अर्थात् दो से अधिक)

इनके कारक चिह्न कहाँ गये ?   लोप हो गये।

इसी प्रकार अन्य शब्दों को भी समझो कि वे किन शब्दों के योग से बने हैं।

इस प्रकार जब परस्पर सम्बन्ध बतलानेवाले चिह्नों या शब्दों के लोप के साथ दो या दो से अधिक शब्दों का योग होता है तो इस योग को **समास** कहते हैं; और जिन शब्दों का योग होता वे पद कहलाते हैं।

(आ)

निम्नलिखित वाक्यों में बड़े अक्षरवाले शब्दों को देखो

१—राजकुमार आया। २—गोशाला आओ।

३—देशभक्ति मनुष्य को पूज्य बनाती है।

ऊपर के तीनों समस्त शब्दों के पद बनाओ। क्रमशः (१) राजा का कुमार (२) गौ की शाला (३) देश की भक्ति।

वाक्य के अर्थ की दृष्टि से इन समस्त शब्दों का पहला पद प्रधान है अथवा अंतिम पद?

हमारा कार्य करनेवाला कुमार है या राजा, शाला है या गौ, भक्ति है या देश? अन्तिम पद ही प्रधान है।

इस अन्तिम पद की प्रधानता रखनेवाले समास को तत्पुरुष कहते हैं क्योंकि इसमें तत् (अर्थात् वह, आगे का) पुरुष प्रधान होता है।

नीचे दिये हुए वाक्यों में बड़े अक्षरवाले शब्दों को फिर देखो

१—स्वर्गगत पिता की चिन्ता न करो।

२—तुलसी-रचित रामायण पढ़ी जायेगी।

३—मुनि ने हवनकाष्ठ मँगवाया।

४—वह देशनिर्वासित मनुष्य दण्ड के योग्य न था।

५—रामचन्द्र पृथ्वीपति थे।

६—नगर-निवास हमें दुर्लभ है।

७—अधर्म से डरो।

स्वर्गगत शब्द का पदविग्रह क्या होगा? स्वर्ग ... कर्म कारक ... कारक में है?

जिस तत्पुरुष में पूर्वपद कर्मकारक में हो उसे कर्मतत्पुरुष कहते हैं; जैसे—नरकप्राप्त, दुःखातीत इत्यादि ।

तुलसी-रचित शब्द का विग्रह करके बताओ कि पूर्वपद किस कारक में है ? करण कारक में ।

जिस तत्पुरुष में पूर्वपद करण कारक का अर्थ देता हो उसे करणतत्पुरुष कहते हैं; जैसे—काष्ठनिर्मित, स्वाधिकृत, गुणहीन इत्यादि ।

हवनकाष्ठ शब्द में पूर्वपद किस कारक का अर्थ देता है ?

सम्प्रदान का ।

जिस तत्पुरुष में पूर्वपद सम्प्रदान कारक का अर्थ देता है वह सम्प्रदानतत्पुरुष कहलाता है; जैसे—रोगौषधि, प्रसादान्न इत्यादि ।

'देशनिर्वासित' में पूर्वपद किस कारक का अर्थ देता है ?

अपादान का ।

जिस तत्पुरुष में पूर्वपद अपादान कारक का अर्थ दे वह अपादान तत्पुरुष कहलाता है; जैसे—स्वर्गपतित, मृत्युभीत इत्यादि ।

'पृथ्वीपति' में पूर्वपद किस कारक का अर्थ देता है ?

सम्बन्ध कारक का ।

जब पूर्वपद सम्बन्ध कारक का अर्थ दे तो सम्बन्धतत्पुरुष होता है;—जैसे राजपुरुष, परीक्षाफल इत्यादि ।

'नगरनिवास' में पूर्वपद किस कारक का अर्थ देता है ?

अधिकरण का ।

जब पूर्वपद अधिकरण का अर्थ दे तो अधिकरणतत्पुरुष होता है जैसे—सभाचतुर, जलमग्न इत्यादि ।

'अधर्म' शब्द का क्या अर्थ है ? धर्म का

अभाव का अर्थ कैसे निकला ? 'अ' के

इसे हम नञ्तत्पुरुष कहते जैसे—अब्राह्मण, अ

(३)

नीलोत्पल	घनश्याम	पुरुषसिंह	विद
प्रथमपरीक्षा	चन्द्रवदन	मुखचन्द्र	पद

नीलोत्पल और प्रथमपरीक्षा किन पदों से बने हैं ?
नील + उत्पल और प्रथम + परीक्षा।

ये कैसे पद हैं ? विशेषण तथा संज्ञा (विशेष्य)।
इन पदों के कारक क्या होंगे ? एक ही।

उत्पल कैसा है ? नील (गुण)। नील क्या है ? उत्पल (विशेष्य)।

परीक्षा कैसी ? प्रथम (विशेषण)। प्रथम क्या ? परीक्षा (विशेष्य)।

यों नील और उत्पल दोनों शब्दों का समान अधिक और दोनों के अर्थों की प्रधानता है।

इस प्रकार के विशेषण और विशेष्य के समास को, दोनों पदों का समानाधिकरण हो कर्मधारय कहते हैं; जैसे महापुरुष, दीननर इत्यादि।

'घनश्याम' और 'चन्द्रवदन' के क्या अर्थ हैं ?
घन की तरह श्याम। चन्द्र की तरह वदन।

पुरुषसिंह और 'मुखचन्द्र' के क्या अर्थ हैं ?
पुरुष सिंह की तरह। मुख चन्द्र की तर

ये चारों पद कैसे हैं ? मश

जिन दो दो पदों में समास हुआ है उनमें क्या विशेषता

दोनों पद समान धर्म हैं—अर्थात्, जो गुण एक में वह दूसरे में भी।

घन में कौन गुण है ? श्यामता। श्याम में कौन गुण है श्यामता।

पुरुष में कौन गुण है ? सिंहत्व (वीरता)। सिंह में क गुण है ? सिंहत्व (वीरता)।

पदपङ्कज के पदों पर विचार करो और बताओ कि पद का संकेत किसकी ओर है ? पैरों की ओर।

पंकज (कमल) किसकी ओर संकेत करता है ? पैरों की ओर, यों एक ही गुण, भाव या अर्थ की ओर संकेत करनेवाले दो संज्ञा शब्दों में भी कर्मधारय समास होता है। इसी प्रकार विद्याधन भी समझो।

(ई)

त्रिलोकी	त्रिभुवन
पञ्चपात्र	षड्दर्शन

ऊपर लिखे शब्द किन-किन पदों के योग से बने हैं ?

त्रि + लोकी (अर्थात्, तीनों लोकों का समूह)

त्रि + भुवन (अर्थात्, तीनों भुवनों का समूह)

पञ्च + पात्र (अर्थात्, पाँचों पात्रों का समूह)

षड् + दर्शन (अर्थात्, छहों दर्शनों का समूह)

इनमें दोनों पद कैसे हैं ? एक संख्यावाचक एक विशेषण और दूसरा संज्ञा।

इस प्रकार संख्यावाचक विशेषण के साथ किसी पद के योग को द्विगु समास कहते हैं; जैसे—नवग्रह, पञ्चवायु इत्यादि।

संसार की रचना पञ्चतत्त्व से हुई।

इस उदाहरण में वाक्य के विचार से 'पञ्च' के अर्थ की प्रधानता है या 'तत्त्व' के अर्थ की।

अब बताओ कि द्विगु समास में किस पद के अर्थ की प्रधानता रहती है।

१ { रामकृष्ण भाईबहिन अन्नजल देवनागकिन्नरगन्धर्व
मातापिता गौगुरु जलवायु स्वर्गभूमिपाताल
गायबैल हरिहर देवीदेवता धर्मार्थकाममोक्ष

२ { जाति कुजाति धर्माधर्म स्वर्गनरक
ऊँचनीच पापपुण्य दुःखसुख }

प्रथम उदाहरण समूह के शब्दों को देखो।
रामकृष्ण से क्या समझते हो ? राम औ
मातापिता से क्या समझते हो ? माता औ
इसी प्रकार अन्य शब्दों के अर्थों पर विचार करो
इन शब्दों में पदों का योग किस प्रयोजन से हुआ है
भिन्न पदों को एकत्र (इकट्ठा) करने के लि
इन पदों को एकत्र कैसे करते हो ? 'और' अव्यय
करके।

दूसरे उदाहरण-समूह में देखो।
'जातिकुजाति' का क्या अर्थ है ? जाति अथवा कुजा
ऊँचनीच, धर्माधर्म आदि से क्या समझते हो ?
ऊँच अथवा नीच, धर्म अथवा अधर्म इत्यादि।
योग करनेवाले पदों में परस्पर क्या सम्बन्ध है ?
परस्पर विरो
इन विरोधी पदों का योग किस उद्देश्य से हुआ है ?
एक साथ बताने के
इन्हें एक साथ कैसे करते हो ?
'अथवा' अव्यय का लोप
अब इन वाक्यों में बड़े अक्षरवाले शब्दों पर पुनः विचार

१—माता पिता की आज्ञा मानो।

२—भाई बहिन प्रेम से रहो।

३—दुष्टों को धर्माधर्म का विचार नहीं।

वाक्य के विचार से बड़े अक्षर वाले शब्दों में किस पद को प्रधानता दी गई है ? दोनों पदों को।

इस प्रकार जब दो या दो से अधिक पदों का एक साथ योग कर उनके सभी पदों को प्रधानता दें तो द्वन्द्व समास होता है।

(ऊ)

यथाशक्ति	यावज्जीवन	आजन्म
यथाक्रम	आमरण	प्रतिदिन

ऊपर के शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करो और बताओ कि ये कैसे शब्द हैं ? ये सभी क्रियाविशेषण अव्यय हैं।

अब इन शब्दों की बनावट पर ध्यान दो।

यथाशक्ति का क्या अर्थ है और किन पदों के योग से बना है ?

शक्ति के अनुसार, यथा और शक्ति के योग से बना है।

इसी प्रकार यावज्जीवन, यावत् और जीवन पदों के योग से बना है, जिसका अर्थ है, जीवन भर (पर्यन्त)।

अन्य शब्दों को भी इसी प्रकार समझो।

जिन दो पदों के योग से ये शब्द बने हैं उनमें पहला पद व्याकरण के अनुसार क्या है ? अव्यय।

और दूसरा पद ? संज्ञा।

यों अव्यय और संज्ञा का योग कर हम क्रिया-विशेषण अव्यय बना लेते हैं, और ऐसे समास को अव्ययीभाव कहते हैं।

(ए)

अनादि जगत का पालक चक्रपाणि विष्णु है।

जितेन्द्रिय मनुष्य जीवन में सदा कृतकार्य होता है।

रुद्रादि देवताओं ने कमलनेत्र वासुदेव की स्तुति की

ऊपर के बड़े अक्षरवाले शब्द व्याकरण के अनुसार क्या
कि

इन शब्दों की बनावट और पदों के अर्थों पर ध्यान दे
'अनादि' में क्या पाते हो ? न और आदि पदों से बन

इसका अर्थ है- नहीं है आदि जिसका ।

'चक्रपाणि' में क्या पाते हो ? चक्र और पाणि पदों से ब

इसका अर्थ है--चक्र है पाणि (हाथ) में जिसके ।

'जितेन्द्रिय' में क्या पाते हो ? जित और इन्द्रिय
बना है ।

इसका अर्थ है—जीत ली हैं इन्द्रियां जिसने ।

अब देखो कि इन शब्दों को बनानेवाले पदों के
क्या प्रधानता है ?
कु

'अनादि' शब्द के द्वारा इसके दोनों पदों के अर्थ
जगत् का बोध होता है। 'चक्रपाणि' शब्द से चक्र
पदों के अर्थों को प्रधानता न मिलकर विष्णु के अर्थ
नता मिलती है ।

जिस अन्य शब्द के अर्थ को प्रधानता मिलत
व्याकरण के अनुसार क्या है ?

यों योग में आनेवाले पदों के अर्थ को प्रधानता न दे
शब्द का बोध करानेवाला समास बहुब्रीहि कहलाता है

ऊपर के वाक्यों के शेष उदाहरणों में बहुब्रीहि स
इस परिभाषा की परीक्षा करो ।

अभ्यास

१--समास किसे कहते हैं ?
२—समास के कितने भेद हैं ? प्रत्येक का उदाहरण दो ।

...माप्त किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं? प्रत्येक का
दो।
...पुरुष से क्या समझते हो? उदाहरण दो।
...ौर द्वन्द्व समासों में क्या अन्तर है?
...ौर कर्मधारय समासों में क्या समानता है? इन दोनों में
अन्तर है?
...ीहि समास को तत्पुरुष क्यों नहीं कह सकते? इन दोनों में
... भेद है?
...व्ययीभाव समास किसे कहते हैं? इस प्रकार बने शब्द व्याकरण
... क्या होते हैं?
निम्नलिखित बड़े अक्षरवाले शब्दों के पद विग्रह कर बताओः—

१—चित्रकूटनिवासी मुनियों ने वनागत राम की स्तुति की।

२—अयोध्यापति दशरथ दशानन को यज्ञभूमि में पराजित देख प्रसन्न हुए।

३—यथाशक्तिप्रयत्न करो। प्रतिदिन अभ्यासकर सफल बनोगे। हलधर ने द्वारकाधीश को रथारूढ़ पाया।

४—लम्बोदर नीलकण्ठ शिव के पुत्र थे।

५—तनधनधाम धरणिपुरराजू।
पतिविहीन सब शोकसमाजू।

६—श्यामशरीर स्वभाव सुहावन।
शोभा कोटिमनोज लजावन।
सहसबाहु भुजछेदनहारा।
परशु विलोकु महीपकुमारा।
विमलसलिल सरसिज बहुरंगा।
जलखग कूँजत गुञ्जत भृङ्गा॥

———

अध्याय ८

संज्ञाएँ और उनका समन्वय

संज्ञा किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित बता

संज्ञा शब्द किसी का नाम होता; जैसे, पुस्तक।

[वह पुस्तक जो कागज की बनी हुई है संज्ञा नहीं एक वस्तु है। उस वस्तु का नाम संज्ञा है।]

संज्ञाएँ कितने प्रकार की होती हैं ?

परिभाषा और उदाहर

व्यक्तिवाचक संज्ञा वह है जो केवल एक ही बोध कराये।

जैसे:—(१) एक ही व्यक्ति का नाम—हरी, चेतक, कैरा

(२) एक ही स्थान का नाम—कानपुर, ताजमहल,

(३) एक ही वस्तु का नाम—भगवद्गीता, कोहेनूर,

(४) एक ही समूह का नाम—नागरीप्रचारि सर्वभमन्यु दल, सेवासमिति।

जातिवाचक संज्ञा वह है जो एक जाति की का नाम हो।

जैसे:—(१) व्यक्तियों की जाति का नाम—मनुष्य, घोड़ा,

(२) स्थानों की जाति का नाम—नगर, घर, पहा

(३) वस्तुओं की जाति का नाम—पुस्तक, हीरा,

(४) समूहों की जाति का नाम—सभा, दल, स

भाववाचक संज्ञा वह है जो किसी पदार्थ के गुण, दशा, धर्म, व्यापार या भाव का नाम हो।

जैसे:—(१) गुणों के नाम—चतुराई, सफेदी, [illegible]

(२) दशाओं के नाम—बुढ़ापा, निर्धनता [illegible]

(३) धर्मों के नाम—अध्ययन, दया, वैराग्य ।
(४) व्यापारों के नाम—लड़ाई, चाल, हँसी ।
(५) भावों के नाम—क्रोध, प्रेम, गणित, ज्योतिष (एक प्रकार की विद्या का भाव ।)

नीचे दिये हुए शब्दों को बताओ कि ये यौगिक, रूढ़ि अथवा रूढ़ि हैं; साथ ही देखो कि वे किस प्रकार के संज्ञा शब्द हैं:-

(१) युधिष्ठिर, पीताम्बर, श्यामलाल, हिमालय, रामायण, ...पतिसिंह, हरी, अर्जुन ।
(२) मनुज, भूधर, उदधि, किताब, फूल, वन ।
(३) कठोरता, जागरण, मनुष्यत्व, घबड़ाहट, बुढ़ापा, मोटाई ।

१ में व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं जो यौगिक हैं अथवा रूढ़ि ।
२ में जातिवाचक संज्ञाएँ हैं जो यौगिक हैं अथवा रूढ़ि ।
३ में भाववाचक संज्ञाएँ हैं जो सभी यौगिक हैं ।

व्यक्तिवाचक तथा जातिवाचक संज्ञाओं में योगरूढ़ि शब्दों ... अर्थों में क्या विभिन्नता पाते हो ? व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का अर्थ कुछ भी हो व्यक्ति विरुद्धर्मी हो सकता है। सम्भव है, श्यामलाल गोरे हों। परन्तु, जातिवाचक संज्ञा का योगरूढ़ि शब्द अवश्य ही अंशतः सार्थक होगा ।

१—सती स्त्री किस लक्ष्मी से कम है ?
२—हमारे मुहल्ले में चार गोपाल बाबू हैं ।
३—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र दूसरे कर्ण थे ।
४—ज्वरों के कई प्रकार हैं ।
५—मोहन में अनेक अच्छाइयाँ हैं ।
६ भारत में बहुत लड़ाइयाँ हुई ।

... उदाहरणों में बड़े अक्षरवाले ... संज्ञाएँ ...

पहले तीन में व्यक्तिवाचक और दूसरे तीन में भाववा[illegible]

पहले तीन के प्रयोग में क्या विशेषता पाते हो ? प[illegible] शब्द लक्ष्मी देवी के से असाधारण गुण रखने वाली स्त्री के लिये प्रयुक्त है। 'गोपाल बाबू' एक ही नाम के [illegible] व्यक्तियों का सूचक है। 'कर्ण' शब्द कर्ण के समान [illegible] दानी पुरुष का परिचायक है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा के ऐसे विशेष प्रयोग उन्हें जाति[illegible] संज्ञा बना देते हैं।

भाववाचक संज्ञाओं के प्रयोग में क्या विशेषता पाते है[illegible] यही कि ये बहुवचन में प्रयुक्त हैं। ऐसी दशा में [illegible] वाचक संज्ञाएँ जातिवाचक बन जाती हैं।

कुछ जातिवाचक संज्ञा, विशेषण और क्रियाओं से [illegible] वाचक संज्ञाएँ जातिवाचक बन जाती हैं।

नीचे दिये हुए शब्दों के लिङ्ग बताओ:—

पुत्र, सन्तान, कौआ, कोयल, चन्द्रमा, पृथ्वी, रेल, [illegible] मकान, इमारत, मन्दिर, मस्जिद, चाँदी, सोना, मूँगा, मोती सभा, मण्डल, कुटुम्ब, दल, सेना, गेहूँ, मक्का, चना, मूँग, कोठा, पुस्तक, सरकार, विपक्ष, आग, दही, धूप, हवा, पवन

इन शब्दों का लिङ्ग-ज्ञान कैसे करते हो ? केवल [illegible] के व्यवहार अथवा प्रयोग के परिचय से। जैसे पुत्र और स[illegible] दोनों पुरुषवाची हो सकते हैं किन्तु पुत्र सदा पुंलिङ्ग है सन्तान सदा स्त्रीलिङ्ग। कौआ और कोयल पुरुष और स्त्री प्रकार के होते हैं, किन्तु कौआ सदा पुंलिङ्ग है और [illegible] स्त्रीलिङ्ग। हवा और पवन एक ही वस्तु है, परन्तु हवा स्त्रीलि[illegible] और पवन पुंलिङ्ग। इसी प्रकार अन्य शब्दों को भी समझो।

नीचे दिये हुए शब्दों के स्त्रीलिङ्ग बताओ और [illegible]

२—दशरथ के प्राण राम के वियोग में गये।
३—घर के समाचार क्या हैं?
४—तुम सा पुत्र पाकर हमारे भाग्य फूट गये।

ऊपर के उदाहरणों में बड़े अक्षर वाले शब्द किस वचन में हैं?
बहुवचन में हैं।

इनके रूप की क्या विशेषता है? ये प्रायः बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं, यद्यपि इनका रूप एकवचन का सा ही है।

१—इस वर्ष आम बहुत हुआ।
२—मोहन ने विदेश में बहुत रुपया कमाया।
३—कानपुर में बहुत मज़दूर हैं।
४—मेले में देहात के आदमी बहुत आए।
५—जंगल में पेड़ ही पेड़ हैं।

ऊपर के बड़े अक्षरवाले शब्दों के रूप देखो और समझो कि ये किस प्रकार एकवचन होने पर भी बहुवचन में हैं।

१—मोहन जा रहा है।
२—पत्र लिखा जा रहा है।
३—राम से बैठा नहीं जाता।
४—हरी ने पुस्तक पढ़ी।
५—गोपाल से पत्र लिखा जा रहा है।

ऊपर के उदाहरणों में कर्त्ता बतलाओ। इन्हें कर्त्ता क्यों कहते हो?

इसीलिये कि ये क्रियाओं के करनेवाले हैं अथवा क्रिया इन्हीं का होना बताती हैं।

किसी संज्ञा शब्द को कर्त्ता मानकर सातों और पढ़ी क्रियाओं के सभी कालों के रूपों का प्रयोग वाक्यों में करा...

बतलाओ कि कर्ता शब्द के बाद 'ने' चिन्ह का प्रयोग किस दशा में होता है ?

अकर्मक क्रिया में 'ने' चिन्ह का प्रयोग नहीं होता। सकर्मक क्रिया में केवल भूतकाल के सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध के रूपों में 'ने' चिन्ह का प्रयोग होता है।

नीचे के वाक्यों में बड़े अक्षरवाले शब्द किस कारक में हैं—

१—राम ने **मोहन** को मारा।

२—हरी **पत्र** लिखता है।

३—**पुस्तकें** पढ़ी गई।

४—गोपाल ने **माधव** से तुम्हारी बात कह दी।

५—नौकर **गाँव** के प्रति जा रहा है।

ये सभी कर्म कारक में हैं। ध्यान दो कि कर्मकारक में संज्ञा शब्दों के कैसे रूप हो सकते हैं।

१—**लाठी** से साँप मारा गया।

२—**हाथ** से पत्र लिखा गया।

३—**राम** से पत्र लिखा गया।

ऊपर के तीनों उदाहरणों में बड़े अक्षरवाले शब्दों के रूप देखो और समझो कि 'लाठी से' साधन या कारण है, किन्तु लाठी स्वयं कर्त्ता नहीं है। 'हाथ से' में हाथ द्वारा लिखा अवश्य जाता है किन्तु लिखने का साधन कलम होगी। हाँ, उस क़लम का चलानेवाला हाथ होगा जिसका प्रयोग-कर्त्ता लेखक है। इसलिये 'हाथ से' को प्रयुज्य कर्त्ता कहेंगे। तीसरे वाक्य में 'राम' क्रिया का करनेवाला है जो कि करणकारक के रूप में कर्त्ताकारक है।

१—साधु की मृत्यु विष के कारण हुई।

-यात्री रेल द्वारा गया।

-भगवान् को बार बार प्रणाम है।
-हृदयहीन मनुष्यों को धिक्कार है।

र के उदाहरणों में बड़े अक्षरवाले शब्द किस प्रकार का
वते हैं? इनमें समझो कि कर्म का चिन्ह रखते हुए भी
शेष अवसरों पर संज्ञा शब्द सम्प्रदान हो जाते हैं। माना
ा देने के अर्थवाली क्रियाओं के साथ और प्रणाम तथा
र के अवसरों पर ये सम्प्रदान होते हैं।

—कानपुर से कलकत्ता लगभग आठ सौ मील है।
—दूध से मक्खन निकलता है।
—सोमवार से परीक्षा होगी।
—नदी से उत्तर घने जंगल हैं।
- गाय सिंह से डरती है।
—अपराधी अपने मित्रों से शरमाता है।

पर के अपादान कारक किन अर्थों में प्रयुक्त हैं? पृथकता,
या तुलना, आरम्भ, परे, भय और लज्जा के अर्थों में।

चे के उदाहरणों में सम्बन्धी शब्दों को देखो और समझ
रके सम्बन्ध किन भावों में हैं:—

—तुलसीदास की रामायण।
—विष्णु का भक्त।
—दशरथ का पुत्र।
—हाथ या अँगूठा; दुमंजिले का कमरा।
—कुबेर की नगरी।
६—मिट्टी का घड़ा।

क्रमशः कर्त्ता-कर्म का, सेव्य-सेवक का, जन्य-जनक का,
-अङ्गी का, अधिपति-वस्तु का और कार्य-कारण का।

१—गोरखपुर में भूकम्प आया।

२—चार दिनों में परीक्षा समाप्त होगी।

३—हमने दो रुपये में घड़ी खरीदी।

४—राम में और कृष्ण में कौन बड़ा है?

ऊपर के अधिकरण कारकों को देखो कि वे किस प्रयुक्त हुए हैं? क्रमशः स्थान, समय, मूल्य, और निर्धारण में।

१—कुशलसिंह थानेदार जान पड़ते थे।

२—युवराज स्काउटिंग के संरक्षक हैं।

३—सभासदों ने रणवीर को मंत्री चुना।

४—मोहन ने अपने पिता को शत्रु समझा।

ऊपर के बड़े अक्षरवाले शब्द क्या हैं? क्यों?

क्योंकि इनकी क्रियाएँ अपू

१—हे राम, नदी बह रही है।

२—भगवानदीन ने साँप को लाठी से मार डाला।

३—त्रेता में राम ने अपने भाई के लिए गद्दी छोड़ी परन्तु द्वापर में युधिष्ठिर अपने भाई का संहार करके राजा बन।

४—गंगा के सामने सगुनपुर से आनेवाला पहल सुन्दर, क्या चीज़ है।

चौथे वाक्य में 'सुन्दर' किस कारक में है?

उसी कारक में जिसमें 'पहलवान' है।

पहलवान शब्द 'सुन्दर' की बाबत क्या बतलाता है? विशेष यह विशेषताद्योतक संज्ञाशब्द, और ...

होता है, उसका समानाधिकारी होने से समानाधिकरण / एक में कहा जाता है।

ऊपर के वाक्यों को देखकर बताओ कि संज्ञाशब्द का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता है? संज्ञाशब्द सातों कारकों में पृथक् की भाँति, सम्बन्धबोधक अव्यय का सम्बन्धी होकर और समानाधिकरण बनकर वाक्यों में प्रयुक्त होता है।

नीचे के उदाहरणों में देखो कि संज्ञा के स्थान पर अन्य ान शब्द प्रयुक्त हो सकते हैं:—

१—राम ने कहा कि मैं कलकत्ते जाऊँगा।

२—बुद्धिमान् सोच विचारकर काम करता है।

३—इधर उधर की चिन्ता छोड़ो।

४—अन्न के बिना चारों ओर हायहाय मची हुई है।

५—प्रातःकाल घूमना स्वास्थ्य के लिए हितकारी है।

६—राम नदी में तैरना पसन्द करता है।

७—तुम्हारा काम केवल बच्चे को खिलाना है।

हम पाते हैं कि क्रमशः सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण, विस्मयादिबोधक अव्यय और क्रियाएँ संज्ञाशब्दों के स्थान में प्रयुक्त होते हैं।

अन्तिम तीनों उदाहरणों में संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होनेवाली क्रियाएँ क्रियार्थक संज्ञाएँ कही जावेंगी, क्योंकि इन शब्दों से क्रिया तथा संज्ञा दोनों का अर्थ प्रकट होता है। इनकी पदव्याख्या करना सीखो।

अभ्यास

१—नीचे के मोटे अक्षरवाले शब्दों की पूर्ण पद-व्याख्या करो—

१—पं० प्रतापनारायण जी मिश्र ने काव्य की उन्नति के साहित्य-मण्डलों की स्थापना की थी, किन्तु वे सब क्यों विनाश की ओर जा रहे हैं ?

२—इस समय यूरोप में अनेक वीर नेपोलियन होने का कर रहे हैं। हम नहीं जानते इसका परिणाम क्या क्या घनघोर लड़ाइयाँ लड़ने के लिए ही वीरों जन्म होता है ?

३—धन्य है, भगवान् ! आइये। हमें तो आपके दर्शन पाकर बड़ी ही प्रसन्नता है।

४—बरसात ने तो नाकों दम कर दिया है। इस समय तारे ही तारे हैं अवश्य, परन्तु घण्टे भर बाद बादल देख पड़ेंगे।

५— बादशाह, सलामत रहें। राजपूत होता ही बहादुर चढ़ाई बोली है तो सीरियल न समझिये। देखिये मैदान कितना राजपूत उमड़ आया है।

६—बालचर प्रतिज्ञा करता है कि वह ईश्वर के प्रति कर्तव्य पालन करेगा। वह तन-मन-धन से इसके प्रयत्न करेगा।

७—श्याम से मोहन ने बार-बार कहा कि तुम श्यामा को पुस्तक ला दो। श्यामा को परीक्षा देनी है।

८—अब हम विद्यार्थी हैं तो पढ़ना और लिखना हमारा धर्म यदि हम धनवान् होंगे, तो दूसरों की सहायता कर लेंगे

अध्याय ६

सर्वनाम और उनका समन्वय

सर्वनाम के कितने भेद हैं ? उनके नाम बताओ उदाहरण दो । आदरसूचक मध्यमपुरुष क्या है ?

'आप' शब्द मध्यमपुरुष में आदरसूचक होता है प्रयोग में क्रियाएँ बहुवचन की होती हैं । 'आप' शब्द के नीचे के वाक्यों में देखो:—

१—राम ने माधव को हरी के विषय में कहा : संस्कृत के अच्छे विद्वान हैं ।

२—गोपाल कृष्ण गोखले एक महापुरुष थे; आपने जीवन देश-सेवा में बिताया

३—मोहन ने सभासदों के सामने प्रस्ताव किया के अध्यक्ष द्विवेदी जी चुने जायें क्योंकि आप हिन्दी के आचार्य हैं ।

इन उदाहरणों मे 'आप' शब्द अन्य पुरुष के बहुवचन प्रयुक्त है ।

निजवाचक 'आप' शब्द के रूप बताओ और 'आप' से मिलान करो । क्या पाते हो ? यही कि 'आप' शब्द के रूप एकवचन में होकर दोनों वचनों में होते हैं, परन्तु आदरसूचक 'आप' शब्द के रूप एकवचन में हुए सदा बहुवचन की क्रियाएँ लेते हैं ।

आ रहा है ?

आ रहे हैं ?

५—मोहन का क्या कहना, वह तो दुष्ट लड़का है।

६—शान्ता को बहुत समझाया किन्तु वह चली ही गई।

७—इन लड़कों को इतना पढ़ाया लेकिन ये न सुधरे।

८—इन लड़कियों को इतना पढ़ाया लेकिन ये न सुधरीं।

९—यह वही घोड़ा है जो खो गया था।

१०—यह वही लड़की है जिसने गाने में इनाम पाया था।

११—यह कौन है जो गा रही थी?

१२—वह क्या है जो खूँटी पर टँगा है (या टँगी है)?

१३—इन आदमियों में से कोई आया होगा।

१४—इन लड़कियों में से कोई गई होगी।

१५—यह वही भारत है जो संसार का शिक्षक था।

१६—यह वही भूमि है जहाँ देवता भी जन्म लेना चाहते हैं।

ऊपर के वाक्यों में बड़े अक्षरवाले सर्वनामों का प्रयोग [illegible]
ये किन संज्ञाओं के स्थान में आये हैं?

जिन संज्ञाओं के बदले आये हैं उनके लिंग और [illegible]
सर्वनामों के लिंग और वचनों का मिलान करो। [illegible]

तो सीखा कि सर्वनाम के लिंग और वचन [illegible]
और वचन के समान होते हैं जिनके स्थान [illegible]

नीचे के उदाहरणों को देखो:—

मेरा घोड़ा	[illegible]
मेरा घोड़ी	[illegible]
मेरा घर	[illegible]

उसका बैल ।	उसके बैल ।
उसकी गाय ।	उसकी गायें ।
हमारा नगर ।	हमारे घर ।
हमारी गली ।	हमारी बहिनें ।
तुम्हारा पलँग ।	तुम्हारे खिलौने ।
तुम्हारी खटिया ।	तुम्हारी किताबें ।
उनका बगीचा ।	उनके लड़के ।
उनकी फुलवाड़ी ।	उनकी लड़कियाँ ।
जिसका कुत्ता ।	जिनका कुत्ता ।
जिसकी कुतिया ।	जिनकी कुतिया ।
जिसके कुत्ते ।	जिनके कुत्ते ।
जिसकी कुतियाँ ।	जिनकी कुतियाँ ।
किसका खिलौना ।	किनका खिलौना ।
किसकी डिबिया ।	किनकी डिबिया ।
किसके खिलौने ।	किनके खिलौने ।
किसकी घड़ियाँ ।	किनकी घड़ियाँ ।

ऊपर के सर्वनाम शब्द किस कारक में हैं ? सम्बन्धकारक में । सम्बन्धी संज्ञाओं और सर्वनामों के लिंग तथा वचन के चिन्हों का परस्पर मिलान करो। क्या पाते हो ? यही कि सम्बन्धकारक में आनेवाले सर्वनामों के लिंग तथा वचनों के चिन्ह सम्बन्धी संज्ञाओं के समान होते हैं ।

यह भी देखो कि सम्बन्धकारक में स्त्रीलिङ्ग सर्वनामों का दोनों वचनों में एक ही रूप होता है ।

अभ्यास

१—नीचे लिखे बड़े अक्षरवाले शब्दों का पद परिचय करो —

(१) इसका राजा, [illegible] बड़ा गुणवान है और आपक

राम बड़े शक्तिशाली हैं। आप मेरी सभा में रहें। यदि हमारी बात न मानी जायगी तो हम देखेंगे कि आपकी रक्षा कौन करता है।

(२) क्या घर जा रहे हो ? आओ, जाकर क्या करोगे ? हम भी तुम्हारे ही हैं जो सदा विपत्ति में तुम्हारे लिए अपनी जान देंगे।

(३) यदि बुढ़ापे तक में हमारा और तुम्हारा साथ छूटा तो तुम्हारा कल्याण कौन करेगा ?

(४) 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' की कहावत जो कहते थे वे मूर्ख न थे। आज भी वह सत्य ही सिद्ध होगी। हाँ, लाठी चलाने का वह ढंग भले काम न दे।

२—'तू' तथा 'हम' के विशेष प्रयोग बताओ और 'तुम' का प्रयोग एक ही व्यक्ति के लिए करो।

३—आप शब्द कैसा सर्वनाम है ? अपने वाक्य बनाकर इसके भिन्न-भिन्न प्रयोग बताओ।

४—'कौन' और 'क्या' के भिन्न-भिन्न प्रयोगों को समझाने के लिए वाक्य बनाओ।

५—'हम' शब्द एकवचन के संज्ञाशब्द के लिए किन अर्थों में प्रयुक्त होता है ?

६—सर्वनामों का संज्ञाशब्दों के साथ किस प्रकार समन्वय होता है ? वाक्य बनाकर स्पष्ट बताओ।

७—सम्बन्धकारक में सर्वनाम का सम्बन्ध किन शब्दों के अनुसार होता है ? उदाहरण देकर बताओ।

अध्याय १०

विशेषण और उनका समन्वय

कुछ विशेषण शब्दों के उदाहरण दो और बताओ कि उस की परिभाषा क्या है ?

नीचे के उदाहरणों में देखो —

१—राम के पास काला घोड़ा है।

२—मज़बूत कुर्सी पर बैठो।

३—लोगों ने मूर्ख हरी को पहचान लिया।

४—राम का घोड़ा काला है।

५—कुर्सी मज़बूत है।

६—लोगों ने हरी को मूर्ख जान लिया।

इनमें विशेषण और विशेष्यों की स्थिति देखो। प्रथम तीन वाक्यों में क्या पाते हो ?

विशेषण विशेष्य के पूर्व है, अर्थात् पूर्ववर्त्ती है।

दूसरे तीन वाक्यों में क्या पाते हो ?

विशेषण विशेष्य के बाद है, अर्थात् परवर्त्ती है।

परवर्त्ती विशेषण का अपनी क्रिया से क्या सम्बन्ध है ?

वह उसका पूरक है।

तो सीखा कि विशेषण विशेष्य के सदा समीप रहता किन्तु पूरक होने पर विशेष्य के बाद भी आ जाता है।

गुणवाचक विशेषण किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर बताओ

१—राम अच्छा लड़का है।

२ { राम मोहन से अच्छा है।
मोहन की अपेक्षा राम अच्छा है।
राम और मोहन में राम ...

…राम सब लड़कों में अच्छा है।
…राम श्याम से अच्छा लड़का है।
राम अच्छा लड़का है।

…के उदाहरणों में गुणवाचक विशेषण की भिन्न-भिन्न …ओं को देखो।

…ले वाक्य में यह किस अवस्था में है? साधारण में।

…री वाक्य-माला में इसे किस अवस्था में पाते हो? तुलनावस्था में।

तुलनावस्था को प्रकट करनेवाले विशेषण के भिन्न-भिन्न रूप पाते हो?

जिससे तुलना की गई है, उसे अपादान कारक में रखते हैं। …अथवा अपेक्षा सम्बन्धसूचक अव्यय को उसी शब्द के साथ …जोड़ते हैं। अथवा दोनों तुलना किये जानेवाले शब्दों के समूह …में 'में' लगाते हैं।

तीसरी वाक्य-माला में विशेषण किस अवस्था में है? उत्तम अवस्था में।

इस अवस्था को प्रकट करने के लिए क्या किया गया है? अथवा उसी समूह में अधिकरण का चिन्ह लगाया गया है, अथवा विशेषण की पुनरुक्ति की गई है। अथवा संस्कृत का 'तम' प्रत्ययवाला शब्द प्रयुक्त किया गया है।

नीचे के उदाहरणों में तुलना में समानता दिखलाने के लिए किन-किन सम्बन्धबोधक अव्ययों का प्रयोग करते हैं देखो:—

वह भीम के समान बली है।
उसके दाँत मोती के समान उज्ज्वल हैं।
शूर्पणखा के कान सूप की तरह लम्बे थे।
वह बुड्ढा अमीरों की भाँति दीर्घायु है।

…संख्या-वाचक विशेषण किसे कहते हैं? उसके भेद बताओ:—
निश्चय-वाचक तथा अनिश्चय वाचक।

निश्चय-वाचक के कितने प्रकार हैं ?

गणना, क्रम, आवृत्ति, समुच्चय तथा विभाग दिखलाते

एक रोटी।	दो सेर दूध।	तीन सेर घी।
आधी रोटी।	पाव भर दूध।	डेढ़ सेर घी।

ऊपर के उदाहरणों में कैसे संख्यावाचक विशेषण हैं ? गणनावाच

इन गणनावाचक विशेषणों की पहली और दूसरी पंक्ति क्या अन्तर पाते हो ?

यह कि पहली में पूर्णाङ्क हैं, परन्तु दूसरी अपूर्णाङ्क। क्रमशः पूर्णाङ्कबोधक तथा अपूर्णाङ्कबोधक कहेंगे।

अब इन उदाहरणों को देखो—

हमें लखनऊ में अधिक दिन लगेंगे।

एक दिन मृत्यु अवश्य आवेगी।

दो चार मजदूर बुला लो

एक आध दिन में पिताजी आनेवाले हैं।

सभा में सैकड़ों विद्वान एकत्र हैं।

ऊपर के बड़े अक्षरवाले शब्द कैसे विशेषण हैं ? संख्यावाच

इन के अर्थों पर विचारकर बताओ कि उनमें निश्चय पा जाता है या अनिश्चय।

अनिश्चय पाया जाता है, क्योंकि एक का अर्थ यहाँ को है। इसी प्रकार एक', 'दो चार', 'एक आध', 'सैकड़ों', अनिश्चि संख्या का बोध कराते हैं। इन उदाहरणों से निश्चित संख्यावाच विशेषणों का अनिश्चित बनाना समझो।

नीचे लिखे शब्द क्या हैं ? इनसे विशेषण बनाओ औ बताओ कि वे कैसे विशेषण होते हैं —(इनके बनाने में तद्धि ... प्रत्ययों की सहायता ले सकते हो।)

मनुष्य	कलकत्ता	सौन्दर्य	पढ़ना
घर	भारत	करना	करना
जंगल	गुजरात	झगड़ा	मानना
स्थान	अफगानिस्तान	मिलान	स्मरण करना
दिन	चीन	समय	मरना
रूप	ईश्वर	बुद्धि	
नरक	जीवन	शक्ति	

यह लड़का हठी है।

जो लड़का बड़ों की आज्ञा नहीं मानता, वह दुःख पाता है।

कौन आदमी आया है?

कोई कवि कहता है कि दया धर्म का मूल है।

मुझ बालक पर दया करो।

ऊपर के बड़े अक्षरवाले सर्वनाम शब्द देखो।

यहाँ इनका प्रयोग कैसे हुआ है? विशेषता बतलाने के लिए विशेषण की भाँति। इसीलिए इन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

इसी प्रकार व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बननेवाले विशेषण व्यक्तिवाचक विशेषण होंगे।

१ { अच्छा कपड़ा लाओ। अच्छी साड़ी लाओ।
अच्छे कपड़े लाओ। अच्छी साड़ियाँ लाओ।

२ { वह बालक सुन्दर है। बालिका सुन्दर है।
वे बालक सुन्दर हैं। बालिकाएँ सुन्दर हैं।

३ { यह कीमती घोड़ा है। [illegible]
[illegible]मती घोड़े हैं। [illegible]

४ { राम घरेलू आदमी है। यह घरेलू नौकरानी है।
ये नौकर घरेलू हैं। ये नौकरानियाँ घरेलू हैं।

ऊपर के बड़े अक्षरवाले विशेषणों के लिंग और वचनों का मिलान उनके विशेष्यों के लिंग तथा वचनों से करो। क्या पाते हो? यही कि विशेषण का लिंग और वचन विशेष्य के अनुसार होता है। ऊपर के उदाहरणों से समझकर बताओ कि किस प्रकार के विशेषण विशेष्य के लिंग, वचन बदलने पर अपना रूप बदलते हैं?

आकारान्त विशेषण।

मैं भला हूँ।	तू भला है।	वह भला है।
हम भले हैं।	तुम भले हो।	वे भले हैं।
मैं भली हूँ।	तू भली है।	वह भली है।

ऊपर लिखे हुए नियमों का प्रयोग ऊपर के उदाहरणों में करके देखो और बताओ कि भिन्न पुरुषों के विशेष्य होने पर विशेषण के रूपों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

वचन और लिंग में अन्तर पड़ता है, किन्तु पुरुष बदलने पर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

१—राम ने अपनी गर्दन सीधी कर ली।

२—अधिक परिश्रम से उसने अपनी आकृति पीली बना ली।

३—राम ने अपनी गर्दन को सीधा कर लिया।

४—अधिक परिश्रम से उसने अपनी आकृति को पीला बना लिया।

पहले दो वाक्यों के बड़े अक्षरवाले परगामी विशेषण लिंग और वचन में किसके अनुसार हैं? 'गर्दन' और 'आकृति' शब्दों के अनुसार जो स्त्रीलिंग एकवचन में हैं।

तीसरे-चौथे वाक्यों में इन्हें कैसा पाते हो? ये पुंल्लिंग में हैं

अध्याय ११

क्रियाएँ और उनका [illegible]

क्रिया कितने प्रकार की है ? सकर्मक तथा अकर्मक क्रि[illegible]
[illegible] उदाहरण सहित दो।

१२. एक विद्यार्थी को व्याकरण पढ़ाता है—इस वाक्य में 'पढ़ाता है' कैसी क्रिया है ? इसके कर्म बताओ।

यह द्विकर्मक है, क्योंकि इसके 'विद्यार्थी' और 'व्याकरण' कर्म हैं। इन दोनों कर्मों में से कौन गौण और कौन प्रधान [illegible]

विद्यार्थी गौण कर्म है और व्याकरण प्रधान कर्म है; [illegible] एक पुरुष के लिए है और दूसरा वस्तु या पदार्थ के लिए। उदाहरण में देखो कि कर्म का चिह्न गौण कर्म के साथ है [illegible] प्रधान कर्म के साथ।

नीचे लिखी क्रियाओं से सकर्मक, द्विकर्मक और प्रेरणा[illegible] क्रियाएँ बनाओ.—चलना, कूदना, हँसना, सोना, फूटना, [illegible] धोना, होना, खोना, लिखना, पढ़ना, देखना, खाना, पीना।

इनमें देखो कि अकर्मक क्रियाओं से द्विकर्मक नहीं [illegible] किन्तु सकर्मक क्रियाओं से प्राय: बन जाते हैं। साथ ही देखो [illegible] जाना, होना और सोना के प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते।

१—आप तो मित्र निकले।

२—नौकर गँवार दीखता है।

३—तुम निन्दक ठहरे।

४—तुम आदर्श बनो।

५—इस वर्ष वर्षा भयङ्कर हुई।

६—इन बादलों के कारण अँधेरा घन।

ऊपर कहे हुए अपूर्णसकर्मक क्रियाओं को देखो। ये क्रियाएँ [illegible] क्यों हैं? अपूर्ण

इसलिए कि इन अपूर्ण सकर्मक क्रियाओं को अपने अर्थ की पूर्ति के लिए पूरक शब्दों की आवश्यकता होती है।

इन पूरक शब्दों को कर्म क्यों नहीं कहते?

इसलिए कि इन क्रियाओं का प्रभाव स्वयं कर्मों पर पड़ता [illegible] उनकी पूर्ति के लिए पूरक की आवश्यकता पड़ती है; किन्तु अन्य क्रियाओं में उनका क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ता है, और इसलिए वे कर्मपूरक, या [illegible]पूरक, कहे जाते हैं।

१—अपने भाई को मूर्ख समझता।

२—मैं तुम्हें मित्र मानता हूँ।

३—राम ने विभीषण को अपना भक्त पाया।

४—सुग्रीव ने राम को मित्र बनाया।

ऊपर कहे वाक्यवाली क्रियाएँ कैसी हैं? सकर्मक।

इनमें और द्विकर्मक क्रियाओं में क्या अन्तर है? यही कि द्विकर्मक क्रियाएँ दो कर्म रखती हैं; किन्तु इन क्रियाओं का केवल एक कर्म होता है; और दूसरा कर्म की पूर्ति करनेवाला पूरक शब्द। इन्हें हम अपूर्ण सकर्मक क्रियाएँ कहते हैं।

१—अच्छी चाल चलो।

२—ऐसी रहन रहो जिसे कोई बुरा न कहे।

३—इन लड़कों के साथ तुम भी दौड़ दौड़ो।

४—मैं गहरी नींद सोया।

५—तुम मीठी हँसी हँसते हो।

ऊपर की क्रियाएँ किस प्रकार की हैं?

मोटे अक्षरवाले शब्द क्या हैं?

ये शब्द क्रियाओं से कहाँतक मिलते जुलते हैं? इन्हीं अकर्मक क्रियाओं से बने हुए हैं और इन्हीं क्रियाओं के अर्थ के द्योतक हैं। ऐसी क्रियाएँ अकर्मक से सकर्मक बन जाती हैं और कर्म तथा क्रियाएँ परस्पर सजातीय होती हैं।

सहायक और संयुक्त क्रियाओं के अन्तर बताओ और उदाहरणों से समझाओ। बोल उठा, सो रहो इत्यादि संयुक्त क्रियाएँ हैं क्योंकि ये दो भिन्न क्रियाओं से मिलकर एक बनी हैं। इनमें मुख्य क्रियाएँ बोलना, सोना आदि हैं, और उठना, रहना सहायक क्रियाएँ हैं जो उनकी रूपरचना में सहायक होती हैं।

नीचे के उदाहरणों में बड़े अक्षरवाली क्रियाओं को देखो:—

१—बहती हुई नदी में लाश नहीं ठहर सकती।

२—मैं ने डूबता हुआ आदमी देखा।

३—बही हुई लाश प्रयाग में पकड़ी गई।

४—मल्लाहों ने डूबे हुए आदमी को निकाल लिया।

इन क्रियाओं को तुम क्या कहोगे? क्रियावाचक विशेषण। पहले दोनों उदाहरणों के क्रियावाचक विशेषणों का मिलान पिछले दोनों उदाहरणों के क्रियावाचक विशेषणों से करो। इनमें क्या अन्तर पाते हो? यही कि पहले दोनों उदाहरणों में क्रियाओं का व्यापार जारी है और दूसरे दोनों में व्यापार समाप्त हो चुका है। इसीलिए पहले दोनों असमाप्तिबोधक कहे जाते हैं, और दूसरे दोनों समाप्तिबोधक।

नीचे दिये हुए वाक्यों के वाच्य कारण समेत बताओ:—

१—माँ ने बच्चे को सुलाया।

२—बच्चा सुला दिया गया।

३—यहाँ सोया नहीं जाता।

प्राय: कर्त्ता की असमर्थता बताने में कर्मवाच्य का प्र
होता है।

निम्नलिखित क्रियाओं के सभी कालों के मध्यम पुरु
दोनों वचनों में क्या रूप होंगे :— देखना, आना, होना, ज
करना, बनना।

नीचे दिये हुए वाक्यों को देखो :—

अ
१—देख, इस काम को अभी कर।
२—जल्दी आओ, नायक बनो।
३—जाइये, आप सभापति हो जाइये।
४—वे जायँ या आप जायँ।

ब
१—तू इस काम को कर।
२—जल्दी आना और नायक बनना।
३—जाइयेगा और सभापति हो जाइयेगा
४—वे जायँ या आप जायँ।

अ और ब विभागों की क्रियाएँ किस अवस्था में हैं? विधि
में। क्यों? इसलिए कि आज्ञा पाई जाती है।

अ और ब विभागों में आज्ञापालन के समय में क्या
अन्तर है?

अ में आज्ञापालन का समय तात्कालिक या प्रत्यक्ष है, और
ब में उपरान्त या परोक्ष। इसलिए अ और ब की क्रियाओं को
क्रमशः प्रत्यक्ष और परोक्ष विधि की क्रिया कहेंगे।

१—माँ के बिना बच्चा रोता होगा।
२—कौन जाने बच्चा रोता ही हो।

ऊपर के वाक्यों की बड़े अक्षरवाली क्रियाएँ किस अवस्था
में हैं? उनके अर्थ में परस्पर क्या अन्तर है?

'रोता होगा' सन्दिग्ध वर्तमान है, क्योंकि अर्थ निश्चयात्मक
न होकर सन्देहात्मक है। 'रोता हो' सम्भाव्य वर्तमान है क्योंकि

२—हमने घूसा पकड़ा।

३—तूने गुड़ियाँ पकड़ीं।

४—तुमने गुड़िया पकड़ी।

ऊपर के उदाहरणों में क्रियाएँ (क

अभी ऊपर सीखे हुए नियम के

उदाहरणों के कर्ता के रूपों में और इ

क्या अन्तर पाते हो?

यही कि इनमें कर्ता के साथ 'ने' चि

कर्ता के साथ 'ने' चिह्न कहाँ कहाँ ल

वाक्यों में सभी कालों के रूप प्रयुक्त

सकर्मक क्रिया के भूतकालिक सामान्य,

सन्दिग्ध के रूपों में कर्ता के साथ 'ने' चिह्न

सीखा कि इन्हीं कालों में सकर्मक क्रियाएँ लिं

कर्म के अनुसार होती हैं।

१—मैंने लड़की को मारा।	६—मैंने
२—मैंने लड़कों को मारा।	७—हमने
३—हमने लड़कों को मारा।	८—उस
४—हमने लड़कियों को मारा।	९—उस
५—मैंने तुमको मारा।	१०—तुमने ह

इन वाक्यों में पहले पढ़ा हुआ नियम लागू

पाते हो? यही कि नियम लागू

ऊपर दिये हुए वाक्यों से इनमें क्या विशेषता पाते

यही कि कर्म के आगे 'को' चिह्न लगा

इनमें क्रियाएँ किस पुरुष, लिंग और वचन की हैं

अन्यपुरुष, पुंलिंग,

तो सीखा जिन वाक्यों में कर्ता का चिह्न 'ने'

का चिह्न 'को' मौजूद हो वहाँ क्रियाएँ अन्यपुरुष, पु

वचन में होती हैं।

क्या क्रिया वचन में होनी चाहिए ? बहुवचन में ।

क्या क्रिया वचन में आती है ? एकवचन में ।

दोनों के मिलने से क्या विशेषता पाते हो ?

यही कि वे समुदायबोधक शब्द से जुड़े हुए हैं, और मिलकर एक ही भाव प्रकट करते हैं ।

तो सीखा कि एक से अधिक भिन्न लिंग कर्त्ता एक सम्मिलित ही भाव प्रकट करें तो क्रिया एक ही वचन में होती है ।

१—उसके भाई बहन सब घर गये ।

२—राम, मोहन और सुशीला तीनों पढ़ रहे हैं ।

३—इन्दिरा, शान्ता और सुशीला तीनों पढ़ रही हैं ।

प्रथम दोनों वाक्यों में पढ़े हुए नियमों को लागू करो ।

लागू नहीं होते ।

इन वाक्यों में कर्त्ता और क्रिया के बीच में क्या विशेषता पाई है ?

यही कि अन्तिम कर्त्ता के बाद एक समुदायवाची शब्द है ।

तो सीखा कि यदि भिन्न लिङ्गों के कर्त्ता एक साथ हों और कोई समुदायवाची शब्द उन्हें एकत्र करे तो क्रिया अन्तिम कर्त्ता के अनुसार न होकर पुँल्लिंग में ही होती है ।

तीसरे वाक्य में यह नियम लागू करो । लागू नहीं होता ।

क्यों ? क्योंकि कर्त्ता भिन्न लिंग के नहीं हैं ।

१—रात में जागना बुरा है ।

२—जुआ खेलना अच्छा नहीं ।

३—तुम्हारा बिना बुलाये आना मुझे नहीं भाता ।

ऊपर के वाक्यों में क्रियाओं और उनके कर्त्ताओं को देखो ।

कर्त्ता व्याकरण से क्या हैं ? क्रियार्थक संज्ञाएँ ।

उनके लिए प्रयुक्त होनेवाली क्रियाएँ किस वचन, पुरुष, और लिंग की हैं ? एकवचन, पुँल्लिंग और अन्यपुरुष ।

तो सीखा कि 'तथा' अथवा 'और' शब्दों से जुड़े हुए ... से अधिक कर्ता अन्यपुरुष बहुवचन की क्रिया लेते हैं।

१—कृष्ण अथवा अर्जुन आ रहा है।
२—वह, तुम या मैं रोऊँ।
३—मालती या भगवती मुस्करा रही थी।
इनकी क्रियाएँ किस वचन में हैं? एकवचन
कर्ता कितने हैं?
इन कर्ताओं के बीच में कौन अव्यय है? मध्य में 'अथवा' और 'या'
कर्ता किस वचन में हैं? एकवचन
वे अव्यय क्या काम करते हैं? विभाजक
तो सीखा कि जब कई एक वचन कर्ता 'या' 'अथवा' से विभक्त हों तो क्रिया एकवचन में होती है।

१—लड़कियाँ और लड़के पढ़ रहे हैं।
२—लड़के और लड़कियाँ पढ़ रही हैं।
३—लड़की या लड़का गया।
४—लड़का या लड़की गई।
इन वाक्यों में कर्ता तथा क्रियाओं के लिंग देखो।
किस कर्ता का लिंग क्रिया से मिलता है? अन्त में आनेवाले कर्ता
तो सीखा कि जब वाक्य में एक से अधिक कर्ता हों, क्रिया का लिंग अन्तिम कर्ता के अनुसार होता है।

१—दाल-भात सादा भोजन है।
२—ईंट गारा तैयार है।
३—तन-मन-धन न्यौछावर है।
इन वाक्यों की क्रियाओं के कर्ता कितने पाते हो? प्रत्येक क्रिया के एक से अधिक कर्ता

अध्याय १२

अव्यय और उनका सम्बन्ध

क्रियाओं के साधारण लक्षण क्या हैं? क्रिया का कर्ता अवश्य होता है।

यदि सकर्मक क्रिया हो तो कर्म भी होता है। अपूर्ण हो तो पूरक होता है।

नीचे के उदाहरण देखो:—

मोहन सुबह पत्र लिखेगा।

गाय वहाँ घूमती है।

मोटे अक्षरवाले शब्द क्रिया की क्या विशेषता बतलाते हैं?

यह कि क्रिया होने का समय या स्थान निश्चय कर देते हैं अर्थात् समय या स्थान अन्य न होकर विशेषतः यही है। ऐसे शब्दों को जो क्रिया की विशेषता बताते हैं क्या कहते हो?

क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषणों के भेद सब उदाहरणों से बताओ।

१—लड़का तमाम दिन खेलता रहा।

२—आगे पढ़ो।

३—लड़के ने खेल में तमाम दिन बिता दिया।

४—आगे का भाग ढूँढ़ो

ऊपर के पहले दो वाक्यों में मोटे अक्षरवाले शब्द क्या हैं?

क्रियाविशेषण।

पहला कालवाचक दूसरा स्थानवाचक।

इन्हीं के प्रयोगों को तीसरे और चौथे वाक्यों में देखो। क्या पाते हो?

यह कि संज्ञाओं की भाँति प्रयुक्त हुए हैं।

कुछ गुणवाचक और परिमाणवाचक विशेषणों का प्रयोग क्रियाओं की भाँति करो।

१—वह सुन्दर लेख लिखता है।

२—उसने ऐसा पत्र लिखा कि पढ़कर आँसू आ जाय।

३—इतना गुड़ डालो कि मीठा हो जाय।

४—थोड़ा समय और दो।

५—वह सुन्दर लिखता है।

६—उसने पत्र ऐसे लिखा कि आँसू आ जाय।

७—बच्चा इतना रोया कि सब जाग पड़े।

८—थोड़ा करो।

प्रथम चार वाक्यों में मोटे अक्षरवाले शब्द क्या हैं? विशेषण।

इन्हें पिछले चारों वाक्यों में किस प्रकार प्रयुक्त पाते हो?

क्रियाविशेषण की भाँति।

(रीतिवाचक तथा परिमाणवाचक)

इसी प्रकार अन्य विशेषणों को क्रियाविशेषणों की भाँति प्रयुक्त करना सीखो।

क्रियाविशेषण और अन्तविशेषण में क्या अन्तर है?

नीचे के उदाहरण देखो.-

जो मनुष्य जितना छोटा होता है उसकी बुद्धि उतनी ही छोटी होती है

जैसा अच्छा परिश्रम करोगे वैसा उत्तम सिद्धि पाओगे।

मोटे अक्षरवाले अन्तविशेषण किस प्रकार के हैं?

परिमाणवाचक तथा गुणवाचक

किस विशेषण की विशेषता बताते हैं ?

क्रमशः छोटा, छोटी, अच्छा, अच्छ

ये चारों विशेषण किस लिंग में हैं और किसके अनुसार ?

अपने विशेष्यों के अनुसार क्रमशः पुँलिंग, स्त्रीलिंग, पुँलिंग

स्त्रीलिंग में हैं।

इन विशेष्यों का प्रभाव अन्तर्विशेषणों पर क्या पड़ता है ?

उनके रूप भी विशेष्यों के लिंग के अनुसार हैं।

१ { बच्चा इतना दुर्बल है। / बच्चे इतने दुर्बल हैं।

३ { लड़का ऐसा मूर्ख है। / लड़के ऐसे मूर्ख हैं।

२ { लड़की इतनी चपल है। / लड़कियाँ इतनी चपल हैं।

४ { लड़की ऐसी चतुर है। / लड़कियाँ ऐसी चतुर

ऊपर के बड़े अक्षरवाले अन्तर्विशेषणों के लिंग, वचन कि शब्दों के अनुसार हैं ?

अपने अन्तर्विशेष्यों के अनुसार।

इन अन्तर्विशेष्यों का अन्तिम अक्षर क्या है ? आ।

इन वाक्यों की क्रियायें कैसी हैं ? अकर्मक।

तो सीखा कि अकर्मक क्रियाओं से बननेवाले वाक्यों में आकारान्त अन्तर्विशेषण का लिङ्ग अपने अन्तर्विशेष्य के अनुसार होता है।

नीचे के उदाहरणों में बड़े अक्षरवाले शब्दों को देखो और बताओ कि ये क्या हैं ?

१—वह मकान के सामने खड़ा है।

छत के नीचे पानी गया।

२—सामने देखो। नीचे आ

[illegible] और वासुदेव आये।

[illegible] अथवा [illegible] है।

सुशीला या शान्ता आवेंगी।

[illegible] है किन्तु पानी नहीं बरसता।

ऊपर के मोटे अक्षरवाले शब्द क्या हैं?

समुच्चयबोधक अव्यय।

ये इन वाक्यों में क्या काम करता है?

प्रथम उदाहरण में दो शब्दों को जोड़ता है।

दूसरे उदाहरण में दो वाक्यों को जोड़ता है।

तीसरे उदाहरण में सुशीला तथा शान्ता को जोड़ता है।

दोनों ही आवेंगी? — नहीं, एक।

तो यह क्या करता है? — अर्थों को विभक्त करता है।

चौथे में क्या करता है? — दो वाक्यों को जोड़ता है?

तो क्या अर्थों को भी जोड़ता है? — नहीं।

पहले, दूसरे उदाहरणों में कैसा समुच्चयबोधक है?

संयोजक।

तीसरे, चौथे उदाहरणों में कैसा है? — विभाजक।

तो सीखा कि समुच्चयबोधक दो शब्दों अथवा वाक्यों को जोड़ता है।

संयोजक शब्दों, वाक्यों और उनके अर्थों को जोड़ता है।

विभाजक शब्दों और वाक्यों को जोड़ते हुए उनके अर्थों को विभक्त करता है।

३—अच्छा ! मुझे तेल दूँगा।

४—शांति ! शांति ! तुम लोगों के मारे मरा।

५—चल हट ! तू मेरी नौकरी के योग्य नहीं।

६—वाह वाह ! कितना सुन्दर प्याला है।

७—हाय राम ! कबतक कष्ट के दिन भोगने पड़ेंगे?

ऊपर के वाक्यों में बड़े अक्षरवाले शब्द क्या हैं ?

विस्मयादिबोधक शब्द

ये शब्द अलग क्यों होते हैं ?

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण

इनसे क्या भाव प्रकट होते हैं ?

इनको वाक्य में कहाँ स्थान मिलता है ?

वाक्य के आरम्भ में

तुम तो मूर्ख हो।

सूर्य हमको प्रकाश देता है और चन्द्र भी।

दिन भर न खेलो।

शरीर में हड्डी मात्र रह गई है।

आपका लड़का ही दुष्ट है।

ऊपर के बड़े अक्षरवाले शब्द क्या हैं ? अव्यय।

इनका स्थान क्या है ?

उन्हीं शब्दों के बाद जिन पर ज़ोर दिया गया है।

उपसर्ग

प्रहार, आहार, संहार, विहार, परिहार, उपहार, अभिमुख, अनुचर, संगम, परिचर, विवाद, उपदेश।

ऊपर के शब्दों में बड़े अक्षरवाले विभागों को क्या कहोगे ?

शब्दांश (अर्थात् शब्द का हिस्सा)।

ये शब्दांश किनमें जुड़े हुए हैं? अन्य शब्दों में।

शब्दों के विचार में ये कहाँ जुड़े हैं? शब्दों के आरम्भ में।

इनके जुड़ने से शब्दों पर क्या प्रभाव पड़ा? अर्थ बदल गया है।

इस प्रकार शब्दों के आरम्भ में आकर उनका अर्थ बदलने वाले शब्दांश उपसर्ग कहे जाते हैं।

अब इन शब्दों को देखो:—

(१)आजीवन, आमरण (२) आगमन, आदान (३) आकर्षण, आक्रमण।

ये शब्द किन उपसर्गों से बने हैं? 'आ' के योग से।

इनके बिना शब्दों के क्या अर्थ होते हैं?

इनके योग से शब्दों के अर्थ में क्या विशेषता आ गई?

१ में तक का अर्थ, २ में विपरीत का अर्थ, ३ में समेत का अर्थ।

(१) अतिकाल, अत्यन्त (२) अतिचार, अतिक्रमण। अति।

इन शब्दों में कौन उपसर्ग है?

बिना उपसर्ग के शब्दों के क्या अर्थ हैं?

यह किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?

१ में अधिकता दिखलाने को और (२) में पार जाने, मर्यादा लाँघने के अर्थ में है।

अनुचर, अनुकरण, अनुज, अनुक्रम, अनुसार। अनु।

इनमें कौन उपसर्ग है?

उपसर्ग बिना शब्दों के क्या अर्थ होंगे?

इनके लगने पर शब्दों के अर्थों में क्या विशेषता आ गई है?

पीछे का अर्थ देता है। पीछे चलनेवाला, पीछे करना, पीछे पैदा होनेवाला इत्यादि।

अपकीर्ति, अपमान, अपराध।

इनका उपसर्ग बताओ।   अप।
उपसर्ग के बिना शब्दों के क्या अर्थ होंगे ?
उपसर्गों के कारण अर्थ में क्या विशेषता आ गई ?
यही कि अर्थ स्पष्ट नहीं

(१) अभिमुख, अभिमत। (२) अभिनंदन, अभिरक्षा अभिमान। इनमें कौन उपसर्ग है ?   अभि
उपसर्ग के बिना शब्दों के क्या अर्थ होंगे ?
उपसर्गों के लगने पर अर्थ में क्या विशेषता आ गई ?
१ में सामने का अर्थ और २ में पूर्णता, चारों ओर का अर्थ है।

अधिकार, अध्यक्ष, अधिदैवत।
इनमें कौन उपसर्ग है ?   अधि।
उपसर्ग बिना शब्दों के क्या अर्थ होंगे ?
उपसर्ग लगने पर क्या विशेषता आ गई ?
ऊपर का अर्थ देता है।

(१) अवगुण। (२) अवतरण, अवरोहण।
ऊपर के शब्दों में उपसर्ग बताओ।   अव।
बिना उपसर्ग के शब्दार्थ बताओ।
उपसर्ग के लगने पर अर्थ में क्या विशेषता आ गई ?
१ में विपरीत का अर्थ है और २ में 'नीचे' का अर्थ है।

(१) उत्कर्ष, उत्तेजक (२) उत्पन्न, उत्थान।
इनमें कौन उपसर्ग है ?   उत्।
बिना उपसर्ग के क्या अर्थ होता है ?
उपसर्ग के कारण क्या अर्थ में विशेषता आ गई ?
१ में आधिक्य और २ में ऊपर का अर्थ देता है।

(१) उपपुराण, उपचक्षु, उपपत्नी, उपमंत्र (२) उपचार, उपस्थान, उपहार (३) उपकार, उपदेश (४) उपक्रम।

इनमें कौन उपसर्ग है ? [illegible]
बिना उपसर्गों के [illegible] ?
उपसर्गों के [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

(१) दुर्गुण, दुर्भाग्य, दुर्दशा (२) दुष्कर, दुर्गम, दुर्जय ।
इन शब्दों में कौन उपसर्ग आते हैं ? दुर या दुः
बिना उपसर्गों के शब्दों के अर्थ क्या होते हैं ?
उपसर्गों के लगने से शब्दों में क्या विशेषता आ जाती है ?
१ में कठिनता के अर्थ [illegible], और २ में बुरा का अर्थ प्रकट होते हैं।
निरंकुश, निराभिमान, निरक्षर, निरपराध, निर्लिप्त, [illegible] निरादर, ।
इनमें कौन उपसर्ग है ? निस् या निर् ।
उपसर्ग के बिना शब्दों के क्या अर्थ होते हैं ?
उपसर्ग के लगने पर शब्दार्थों में क्या विशेषता आ जाती है ?
कि निषेध, राहित्य या हीनता का अर्थ आ जाता है ।
पराजय, पराक्रम, पराग, पराभव ।
इनमें कौन उपसर्ग है ? परा ।
उपसर्ग बिना शब्दों के क्या अर्थ पाते हो ?
उपसर्ग लगने पर शब्दार्थ में क्या विशेषता आ गई है ?
दूसरी ओर, विपरीत, उल्टा या पीछे का अर्थ प्रकट होता है।
(१) परिक्रमा, परिजन, परिवर्तन (२) परिताप, परित्याग, परिपक्व, परिपूर्ण। इनमें कौन उपसर्ग है ? परि ।
बिना उपसर्ग के शब्दों के क्या अर्थ होते हैं ?

६ उपसर्गों का भाव और ८ वाँ प्रकरण ।

अनेक, अनजान, अनाचार, अनिष्ट ।

अकाल, अधर्म, अज्ञान, अयोग्य, अमर ।

अधोगति, अधःपात, अधोभाग, अधोमुख, अधोवायु ।

अन्तःकरण, अन्तःपुर, अन्तःस्थ, अन्तर्दशा ।

कुकर्म, कुढंग, कुमार्ग, कुपुरुष, कुचाल, कुपुत्र ।

चिरकाल, चिरंजीवी, चिरायु ।

नास्तिक, नक्षत्र, नपुंसक ।

पुरस्कार, पुरश्चरण, पुरोहित ।

पुनर्जन्म, पुनर्विवाह, पुनरुक्त ।

बहिष्कार ।

सफल, सवर्ण ।

सत्कर्म, सज्जन, सद्गुरु, सत्पात्र ।

सहकारी, सहोदर ।

स्वभाव, स्वदेश, स्वराज्य, स्वतन्त्र ।

ऊपर के शब्दों को देखो और बताओ कि ये किन उपसर्गों के योग से बने हैं ।

क्रमशः अन, अ, अधः, अन्त, कु, चिर, न, पुरः, बहिः, स, सत्, सह और स्व ।

इन उपसर्गों के लगने से उक्त शब्दों में जो विशेषता आती है उसे इनके अर्थों से समझो ।

अभ्यास

१—(अ) क्रिया-विशेषण तथा अन्तर्विशेषण में क्या भेद है ? उदाहरण समेत बताओ ।

(ब) अन्तर्विशेषणों के कितने भेद हैं ? प्रत्येक के उदाहरण दो ।

२—वाक्य में क्रियाविशेषणों का स्थान कहाँ होना चाहिये ? इसके विरुद्ध कौन-कौन अपवाद तुमने पढ़े हैं ?

३—नीचे लिखे वाक्यों को जोड़ो—

(अ) { एक बालक नदी के किनारे पर टहलने आया।
एक बालक नदी के किनारे टहलने लगा।

(ब { प्रातःकाल हुआ। मोहन सोकर उठा।
आलस्य ने घेर लिया। वह फिर सो गया।

(स)उसको ज्वर आ गया है। उसने कल पकी ककड़ियाँ ख
थीं। ककड़ी खाकर उसने स्नान किया था। मैं दावा कर
हूँ कि एक घण्टे में बुखार दूर कर दूँगा।

४—विस्मयादिबोधक अव्ययों के चार प्रकार के उदाहरण दो औ
बताओ कि वाक्य में उन्हें कहाँ रखते हो।

५—अव्यय यदि किसी शब्द के पूर्व या उसी के बाद ही आते हैं
अर्थ में क्या विशेषता आती है? उदाहरण समेत बताओ।

६—रहितवाची तथा सहितवाची शब्दों के बनाने के लिए वि
उपसर्ग बताओ। और नीचे के शब्दों के अर्थ उनके उपसर्गों
व्याख्या से सिद्ध करो।

अनुज, अवतरण, उत्थान, दुर्गम, पराजय, वियोग, सु
अपमान, अतिकाल, सम्पादन, सत्कर्म।

७—क्रियाविशेषणों का प्रयोग संज्ञाओं की भाँति कर वाक्य बनाओ

८—कुछ ऐसे विशेषण बनाओ जो क्रियाविशेषण की भाँति भी प्र
होते हों। साथ ही इनसे अपने वाक्य बनाओ और दोनों प्र
को दिखलाओ।

९—सम्बन्धबोधकों का सम्बन्ध किन शब्दों के अनुसार होता है?

१०—कुछ ऐसे शब्द बताओ जो सम्बन्धबोधक अव्यय तथा क्रि
विशेषण दोनों होते हों। अपने वाक्यों में दोनों ही प्रकार से प्र
कर बताओ।

११—सम्बन्धबोधक अव्ययों का स्थान किन शब्दों के अनुसार होता
नियम बतलाओ और कुछ अपवाद भी बतलाओ।

अध्याय १६

वाक्य-विश्लेषण (पूर्वार्द्ध)

(अ)

तुम लिखे पढ़े हो ? कुछ वाक्यों के उदाहरण दो।

नीचे दिये हुए उदाहरणों में वाक्य के प्रधान विभाग बताओ।

विभागों के क्या नाम हैं ? उद्देश्य और विधेय।

नीचे लिखे हुए वाक्यों को देखो :—

१—राम हँसता है। २—पागल हँसता है

३—वह हँसता है। ४—तैरना आवश्यक है।

ऊपर के वाक्यों में उद्देश्य बताओ।

फिर बताओ कि व्याकरण में ये उद्देश्य क्या हैं ?

क्रमशः संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियार्थक संज्ञा।

तो सीखा कि संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियार्थक संज्ञा-एँ कर्त्ता का स्थान ले सकते हैं।

(ब)

१—पेड़ का पेड़ सूख गया।

२—पाठशाला के सभी लड़के आवें।

३—बुरे आदमियों के साथ बैठना ठीक नहीं।

इन वाक्यों में उद्देश्य बताओ।

क्रमशः पेड़ का पेड़, पाठशाला के सभी लड़के और बुरे आदमियों के साथ बैठना।

ऊपर (अ) विभाग के उद्देश्यों से (ब) विभाग के उद्देश्यों में क्या विशेषता है ? यही कि (अ) विभाग में अकेले शब्द हैं और (ब) में कई शब्दों के समूह।

इन शब्द-समूहों का पूरे वाक्यों से क्या सम्बन्ध है ?

यही कि वे सम्पूर्ण वाक्य का केवल एक अंश बताते हैं। इसीलिए इन्हें वाक्यांश कहते हैं।

तो सीखा कि कर्त्ता का स्थान वाक्यांश भी ले सकता है।

३—नीचे लिखे वाक्यों को जोड़ो—

(अ) { एक बालक नदी के किनारे पर टहलने आया।
एक बालक नदी के किनारे टहलने लगा।

(ब { प्रातःकाल हुआ। मोहन सोकर उठा।
आलस्य ने घेर लिया। वह फिर सो गया।

(स)उसको ज्वर आ गया है। उसने कल पकी ककड़ियाँ खाई थीं। ककड़ी खाकर उसने स्नान किया था। मैं दावा करता हूँ कि एक घण्टे में बुखार रफा कर दूँगा।

४—विस्मयादिबोधक अव्ययों के चार प्रकार के उदाहरण दो और बताओ कि वाक्य में उन्हें कहाँ रखते हो।

५—अव्यय यदि किसी शब्द के पूर्व या उसी के बाद ही आते हैं तो अर्थ में क्या विशेषता आती है ? उदाहरण समेत बताओ।

६—रहितवाची तथा सहितवाची शब्दों के बनाने के लिए विभिन्न उपसर्ग बताओ। और नीचे के शब्दों के अर्थ उनके उपसर्गों की व्याख्या से सिद्ध करो।

अनुज, अवतरण, उत्थान, दुर्गम, पराजय, वियोग, सुगम, अपमान, अतिकाल, सम्भारण, सत्कर्म।

७—क्रियाविशेषणों का प्रयोग संज्ञाओं की भाँति कर वाक्य बनाओ।

८—कुछ ऐसे विशेषण बताओ जो क्रियाविशेषण की भाँति भी प्रयुक्त होते हों। साथ ही इनसे अपने वाक्य बनाओ और दोनों प्रयोगों को दिखलाओ।

९—अन्तर्विशेषणों का समन्वय किन शब्दों के अनुसार होता है ?

१०—कुछ ऐसे शब्द बताओ जो सम्बन्धबोधक अव्यय तथा क्रियाविशेषण दोनों होते हों। अपने वाक्यों में दोनों ही प्रकार से प्रयोग कर बताओ।

११—सम्बन्धबोधक अव्ययों का स्थान किन शब्दों के अनुसार होता है ? नियम बतलाओ और कुछ अपवाद भी दिखलाओ।

अध्याय १६

वाक्य-विश्लेषण (पूर्वार्द्ध)

(अ)

द किये पढ़ते हो ? कुछ वाक्यों के उदाहरण दो।
ले दिये हुए उदाहरणों में वाक्य के प्रधान विभाग बताओ।
उद्देश्य और विधेय।
न विभागों के क्या नाम हैं ?
ब नीचे लिखे हुए वाक्यों को लिखो :—

१—राम हँसता है। ३—बालक हँसता है।
२—यह हँसता है। ४—हँसना आवश्यक है।

ऊपर के वाक्यों में उद्देश्य बताओ।
फिर बताओ कि व्याकरण में ये उद्देश्य क्या हैं ?
क्रमशः संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियार्थक संज्ञा।
तो सीखा कि संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियार्थक संज्ञा-
शब्द कर्त्ता का स्थान ले सकते हैं।

(ब)

१—पेड़ का पेड़ सूख गया।
२—पाठशाला के सभी लड़के आये।
३—बुरे आदमियों के साथ बैठना ठीक नहीं।

इन वाक्यों में उद्देश्य बताओ।
क्रमशः पेड़ का पेड़, पाठशाला के सभी लड़के और बुरे आदमियों के साथ बैठना।
ऊपर (अ) विभाग के उद्देश्यों से (ब) विभाग के उद्देश्यों में क्या विशेषता है ? यही कि (अ) विभाग में अकेले शब्द हैं और (ब) में कई शब्दों के समूह।
इन शब्द-समूहों का पूरे वाक्यों से क्या सम्बन्ध है ?
यही कि वे सम्पूर्ण वाक्य का केवल एक अंश बताते हैं। इस इसीलिए इन्हें वाक्यांश कहते हैं।
तो सीखा कि कर्त्ता का स्थान वाक्यांश भी ले सकता है।

[illegible] के शब्द के सुनने की क्या [illegible] ?

[illegible] के उद्देश्य, विधेय और उनके और [illegible] को

[illegible] करके, उनका [illegible] दिखलाना होता।

इसी क्रिया को वाक्य-विश्लेषण, वाक्यविग्रह, (विश्लेष

[illegible]) कहते हैं।

अभ्यास

१—शब्द के प्रधान विभाग क्या हैं ? किसी वाक्य का उदाहरण देकर बताओ।

२—साधारण वाक्य के विश्लेषण में वाक्य के कितने अंगों को बताते हो ?

३—उद्देश्य में किन-किन विभागों का समावेश होता है ।

४—कर्ता कौन-कौन शब्द हो सकते हैं ?

५—कर्ता का विस्तार करनेवाले शब्द कौन हैं ?

६—विधेय में किन किन विभागों का समावेश होता है ?

७—क्रिया का विस्तार कौन-कौन शब्द हो सकते हैं ?

८—नीचे दिये हुए वाक्यों का विश्लेषण करो:—

(१) पहाड़ों पर रहनेवाले लोग वर्षा के जल को कुओं में समाम वर्ष भर के लिए एकत्र कर लेते हैं।

(२) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कचहरी जाते समय भी मार्ग में मिले हुए दुखी मनुष्यों पर दया दिखलाते थे।

(३) महाराणा प्रताप ने अपनी जन्मभूमि मेवाड़ के लिए बाल-बच्चों के साथ जंगलों में घूमकर सब प्रकार के संकट सहे।

(४) ज्वर के कारण यह नवयुवक केवल बीस वर्ष की अवस्था में अपने वृद्ध माता-पिता को रोता हुआ छोड़कर संसार से चल बसा।

(५) अपना स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए स्वल्पाहार, स्वच्छ हवा और नियमित जीवन आवश्यक है।

(६) हे भगवान ! इस दीन किसान को क्यों कष्ट देते हो !

(७) रावण ने अयोध्यापति दशरथ के पुत्र रामचन्द्र को अपना [illegible] बनाया।

[illegible] आज से मनुष्य की ध्वनि सुनाई देना कठिन है।

अध्याय १४

वाक्य-विश्लेषण (उत्तरार्द्ध)

(क)

१—राम पुस्तक पढ़ता है।

२—मोहन पत्र लिखता है।

३—राम पुस्तक पढ़ता है और मोहन पत्र लिखता है।

४—हरी ने कहा कि राम पुस्तक पढ़ता है और मोहन पत्र लिखता है।

ऊपर के उदाहरणों में उद्देश्य तथा विधेय देखो और बताओ कि प्रत्येक में कितने उद्देश्य और विधेय हैं ?

पहले दोनों उदाहरणों में एक उद्देश्य है और एक ही विधेय है। परन्तु तीसरे उदाहरण में दो उद्देश्य हैं और दो विधेय हैं।

चौथे उदाहरण में तीन उद्देश्य हैं और तीन विधेय हैं।

पहले दोनों उदाहरणों को जिनमें एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय से भाव पूरा प्रकट हो जाता है उसे साधारण वाक्य कहते हैं।

अब बताओ कि तीसरे और चौथे उदाहरणों में कितने साधारण वाक्य हैं ?

तीसरे में दो, और चौथे में तीन।

यों जब दो या दो से अधिक साधारण वाक्य एकत्र होकर एक बड़ा वाक्य बनाते हैं तो उनमें से प्रत्येक उपवाक्य कहलाते हैं।

अब चौथे वाक्य में देखो कि हरी ने क्या कहा ?

यह कि राम पुस्तक पढ़ता है और मोहन पत्र लिखता है।

तो ये दोनों जुड़े हुए उपवाक्य 'कहा' क्रिया से क्या सम्बन्ध रखते हैं?

कहा क्रिया के कर्म मात्र हैं।

वह उपवाक्य कौन है जिसमें मुख्य उद्देश्य और मुख्य क्रिया है?

हरी ने कहा।

वह उपवाक्य जिसमें मुख्य उद्देश्य और मुख्य क्रिया होती है प्रधान उपवाक्य कहलाता है।

'कहा' क्रिया के कर्म बननेवाले दोनों उपवाक्य प्रधान उपवाक्य से क्या सम्बन्ध रखते हैं?

प्रधान उपवाक्य के अङ्ग हैं, आधीन हैं, आश्रित हैं।

इस लिए इन्हें **आश्रित उपवाक्य** कहते हैं और वह वाक्य जिसमें एक प्रधान उपवाक्य और अन्य आश्रित उपवाक्य हों **मिश्रित वाक्य** कहलाता है।

अब तीसरे वाक्य को देखो:—

बताओ इसमें कौन-सा उपवाक्य प्रधान है?

इसका दूसरा उपवाक्य प्रधान उपवाक्य से क्या सम्बन्ध रखता है?

आश्रित तो नहीं है, क्योंकि न तो मुख्य उद्देश्य का अङ्ग है, न मुख्य क्रिया का। यह भी प्रधान उपवाक्य मालूम होता है और प्रधान उपवाक्य से बराबरी का सम्बन्ध रखता है।

यों जब एक वाक्य में दो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के से हों तब उनमें से पहले उपवाक्य को हम प्रधान उपवाक्य कह लेते हैं, और दूसरे उपवाक्य को इसका निराश्रित या समकक्ष उपवाक्य कहते हैं। ऐसे बड़े वाक्य को जिसमें प्रधान और निराश्रित उपवाक्य हों संयुक्तवाक्य कहते हैं।

(आ)

१—राम ने कहा कि गोपाल बीमार है।

२—यह सच है कि पृथ्वी गोल है।

३—रामायण वह ग्रन्थ है, जो तुलसीदास की रचना कहलाता है।

४—जिसके विषय में आप पूछ रहे थे, वह मनुष्य आ गया है।

५—जब गुरुजी मिलें, उन्हें प्रणाम करो।

६—यदि बीमार हो, तो दवा लो।

ऊपर किस प्रकार के वाक्य हैं? मिश्रित

इनमें प्रधान तथा आश्रित उपवाक्य बताओ।

पहले दोनों वाक्यों में आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य से क्या सम्बन्ध रखते हैं?

पहले वाक्य में आश्रित उपवाक्य 'कहा' क्रिया का कर्म और दूसरे वाक्य में 'है' क्रिया का पूरक।

पूरक और कर्म के स्थान में कौन शब्द आ सकते हैं?

संज्ञा अथवा उसका प्रतिनिधि सर्वना

अतः इन दोनों आश्रित उपवाक्यों को संज्ञा उपवा कहते हैं।

तीसरे और चौथे वाक्यों में आश्रित उपवाक्य प्र उपवाक्य से क्या सम्बन्ध रखते हैं?

तीसरे वाक्य में आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के 'ग्र शब्द की विशेषता बतलाता है और चौथे वाक्य में 'मनुष्य' श की विशेषता।

मनुष्य और ग्रन्थ कैसे शब्द हैं? संज्ञा

संज्ञाओं की विशेषता बतलानेवाले कौन शब्द होते हैं?

इन आश्रित उपवाक्यों को विशेषण उपवाक्य कहते हैं, क्योंकि ये प्रधान उपवाक्य के संज्ञाशब्दों की विशेषता बतलाते हैं।

पाँचवें और छठें वाक्यों में आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के साथ क्या सम्बन्ध रखते हैं ?

पाँचवाँ आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के क्रिया का समय बतलाता है, और छठे में क्रिया का हेतु - अथवा शर्त्त।

क्रिया के हेतु, शर्त्त आदि विशेषताएँ बतलानेवाले शब्द को क्या कहते हो ? क्रियाविशेषण।

अतः इन आश्रित उपवाक्यों को क्रियाविशेषण उपवाक्य कहते हैं, क्योंकि इनके द्वारा प्रधान उपवाक्य के क्रिया की विशेषता बतलाई जाती है।

(६)

१—यह कि राम अवतार थे सच है।
२—सच है कि पृथ्वी गोल है।
३—कृष्ण ने देखा कि बन्दर नाच रहा है।
४—मैंने सुना है कि राम पागल हो गया।

ऊपर के वाक्यों में आश्रित उपवाक्य किस प्रकार के हैं ?
संज्ञा उपवाक्य।

ये संज्ञा उपवाक्य क्यों हैं ?

इसलिए कि पहले वाक्य में 'यह' कर्त्ता के साथ [illegible] [illegible] का काम करता है, दूसरे में 'अपूर्ण क्रिया' है [illegible] [illegible] [illegible] क्रिया का कर्म है और चौथे में [illegible] [illegible] [illegible] है

[illegible] वाक्य का [illegible] है [illegible] नहीं करता है, [illegible]

२—भारत में जगदीशचन्द्र वसु हैं, जिन्होंने विज्ञान में बड़ा अनुसन्धान किया है।

३—वह नौकर, जिसे कल रक्खा था, आज भाग गया।

४—जिसने अपना कर्त्तव्य नहीं सोचा, उसका जीवन व्यर्थ है।

५—जिसने सारी सम्पत्ति बनवायें, उसका नाम भी न रहा।

६—राम की वह पुस्तक है, जो कल खरीदी गई है।

७—मैंने वह पत्र नहीं पढ़ा, जिसे पिताजी ने लिखा था।

८—मैंने उसके लड़के को नहीं देखा, जो आपका मित्र है।

९—मैंने उस वीर का नाम नहीं सुना, जिसने शत्रु को हराया हो।

१०—यह वह वीर है, जिसने शत्रु को कभी पीठ नहीं दिखाई।

११—ऐसा कौन हिन्दी का विद्वान है, जो द्विवेदीजी को जानता हो।

१२—कालिदास उस भाषा के महाकवि थे, जिसे संस्कृत कहते हैं।

ऊपर के वाक्यों में आश्रित उपवाक्य किस प्रकार के हैं?
विशेषण उपवाक्य।

पहले तीन वाक्यों में ये उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के किस अंग की विशेषता बताते हैं? कर्त्ता की।

चौथे, पाँचवें वाक्यों में ये उपवाक्य किस अंग की विशेषता बताते हैं? कर्त्ता के सम्बन्ध की।

छठे, सातवें वाक्यों में ये उपवाक्य किस अंग की विशेषता बताते हैं? कर्म की।

आठवें और नवें वाक्यों में ये उपवाक्य किस अंग की विशेषता बताते हैं? कर्म के सम्बन्धी की।

दसवें और ग्यारहवें वाक्यों में ये उपवाक्य किस अंग की विशेषता बताते हैं? पूरक की।

[illegible]

...रहा है।

—[illegible]

—[illegible]

४—[illegible]

पाया था।

ऊपर के वाक्यों में आश्रित उपवाक्य किस प्रकार के हैं ? विशेषण उपवाक्य।

ऊपर के वाक्यों में ... प्रधान उपवाक्य के किस अंग की विशेषता बतलाते हैं ? विधेय के विस्तार की।

ऊपर के उदाहरणों से समझ लो कि विशेषण उपवाक्य विधेय ... विशेषता बतला सकता है।

...ए हुए भिन्न-भिन्न कारकों की विशेषता ...

१—जब पानी बरसेगा, तब किसान बीज बोवेंगे।

२—ज्यों ही वैद्य आया, त्यों ही रोगी मर गया।

३—जहाँ आग है, वहाँ धुआँ है।

४—आर्य लोग उधर गए, जिधर गङ्गाजी बहती थीं।

५—कारखानों से छुट्टी पाकर मजदूर ऐसे भागते हुए निकलते हैं मानों भेड़ें अपने बाड़े से छोड़ी गई हों।

६—बून्द अघात सहैं गिरि कैसे, खल के वचन संत सह जैसे।

७—ज्यों-ज्यों पानी डाला गया, त्यों-त्यों आग बुझती गई।

८—जैसे-जैसे आय बढ़ी, वैसे ही वैसे तृष्णा भी बढ़ी।

९—इस वर्ष वर्षा अधिक हुई, इसलिए बीज गल गये।

१०—इसकी औषधि करो, क्योंकि वह अधिक बीमार है।

११—यदि पढ़ना हो गया है, तो मन से पढ़ो।

१२—यद्यपि मैं निरपराध हूँ, तथापि मन तो बिना दण्ड दिये नहीं मानता।

१३—चाहे सूर्य पश्चिम में उदय हो, और गंगा समुद्र से हिमालय की ओर बहने लगे, हरिश्चन्द्र का सत्यधर्म न डिगेगा।

१४—बुरा न मानो तो एक बात कहूँ।

ऊपर के उदाहरणों में प्रधान और आश्रित उपवाक्य बताओ।

आश्रित उपवाक्य किस प्रकार के हैं? क्रियाविशेषण।

प्रथम दो वाक्यों में क्रियाविशेषण उपवाक्य क्या काम करते हैं? प्रधान उपवाक्य की क्रिया का समय बताते हैं।

तीसरे, चौथे वाक्यों में क्या काम करते हैं?

स्थान बताते हैं।

इसी प्रकार पाँचवें, छटे में रीति: सातवें, आठवें में परिमाण, नवें और दसवें में कार्य-कारण और शेष पदों में संकेत, विरोध, या हेतु बताते हैं।

इन उदाहरणों से सीख लो कि क्रियाविशेषण उपवाक्य क्या काम कर सकते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों का विश्लेषण करो [illegible] हुए तर्क से समझो —

१—जब पौरस, जो पंजाब का [illegible] सिकन्दर के सामने लाया गया, तो उसने कहा कि मैं तुम्हारे साथ वैसा बर्ताव करूँ।

२—कल जब मैंने द्वार को आधा बन्द [illegible] पानी भी बरस रहा था, एक दुर्बल यात्री [illegible] था, मेरे द्वार पर आया और कहने लगा [illegible] मुझे [illegible] में गरम हो लेने दें, क्योंकि मैं सर्दी खा गया।

अध्याय १५

कथन-भेद

(क)

(१) राम ने लक्ष्मण से कहा,
"तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो।"
(२) लक्ष्मण ने राम से कहा,
"मैं तुमको अत्यन्त प्रिय हूँ।"
(३) लक्ष्मण ने सीता से कहा,
"मैं उनको (राम को) अत्यन्त प्रिय हूँ।"
(४) सीता ने लक्ष्मण से कहा,
"तुम उनको (राम को) अत्यन्त प्रिय हो।"
(५) भरत ने कौशल्या से कहा,
"वह (लक्ष्मण) उनको (राम को) अत्यन्त प्रिय है।"

ऊपर के वाक्यों को पुनः इस प्रकार पढ़ो:—

(१) राम ने लक्ष्मण से कहा कि,
"मैं तुमको अत्यन्त प्रिय हूँ।"
(२) लक्ष्मण ने राम से कहा कि,
"मैं तुमको अत्यन्त प्रिय हूँ।"
(३) लक्ष्मण ने सीता से कहा कि,
"मैं उनको अत्यन्त प्रिय हूँ।"
(४) सीता ने कौशल्या से कहा कि,
"तुम उनको अत्यन्त प्रिय हो।"
(५) भरत ने कौशल्या से कहा कि,
"वह उनको अत्यन्त प्रिय है।"

इन सभी वाक्यों में पहली क्रिया किस विशेष अर्थ की है?
कहना।

६—सीता ने लक्ष्मण से कहा—राम ने मुझसे कहा था कि तुम उनको अत्यन्त प्रिय हो।

७—सीता ने भरत से कहा—राम ने मुझसे कहा था कि तुम उनको अत्यन्त प्रिय हो।

८—भरत ने कौशल्या से कहा—राम ने लक्ष्मण से कहा था कि वह उनको अत्यन्त प्रिय है।

ऊपर के वाक्यों में लक्ष्मण के विषय में क्या प्रकट किया गया है? यही कि लक्ष्मण राम को अत्यन्त प्रिय हैं। कथन-प्रणाली में पहले के वाक्यों की अपेक्षा क्या अन्तर है? पहले के वाक्यों में वक्ता ने एक वाक्य को सीधे सीधे श्रोता से कह दिया है, जब कि इन वाक्यों में एकवार कही हुई बात का और तब के वक्ता तथा प्रतिवक्ता का हवाला देकर यही बात अपने शब्दों में कही गई है। प्रथम लिखे हुए वाक्यों को सरलवर्णनयुक्त वाक्य कहते हैं, क्योंकि वहाँ सुने हुए शब्द ठीक वैसे के वैसे ही सीधे-सादे प्रकार से रख दिए गये हैं। दूसरे प्रकार के वाक्य व्यस्तवर्णनयुक्त कहे जाते हैं क्योंकि उनमें सुनी हुई बात हेर-फेर करके अन्य शब्दों में कही गई है। कुछ व्याकरणकार इन दोनों प्रकार के कथनों को क्रमशः प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष उक्तियाँ भी कहते हैं।

व्यस्त वर्णन में प्रकट की हुई बात को अन्य प्रकार से भी प्रकट कर सकते हैं:—

(१) राम ने लक्ष्मण से कहा कि मैंने तुमको अत्यन्त प्रिय बताया था।

(२) राम ने सीता से कहा कि मैंने तुमसे बताया था कि लक्ष्मण मुझे...

वाक्यों के प्रथम उपवाक्यों से क्या प्रकट होता है ?

कोई किसी से कुछ कहता,

जो कहता है उसे वक्ता, जिसे बात कही जाती है, प्रतिवक्ता तथा क्रिया का वाचक-क्रिया कहते हैं।

वाक्यों के दूसरे उपवाक्य पहले उपवाक्य की क्रिया से कि प्रकार सम्बन्धित हैं ? क्रिया द्वारा कहे गये

इस कहे हुए वाक्य को हम उक्त-भाग कहते हैं।

ऊपर दिए हुए प्रथम पाँचों उदाहरणों को बाद में दिए पाँचों उदाहरणों से मिलाकर देखो। उक्त भाग उलटे अर्द्धविरा मे लिखा गया है, और प्रथम पाँच वाक्यों में बिना किसी अन्य शब्द के क्रिया के बाद तुरन्त आ गया है। इन उलटे अर्द्धविरा को उद्धरण-चिह्न कहते हैं।

नोट:-यहाँ ध्यान दो कि अँग्रेजी भाषा में उद्धरण चिह्न पूर्व 'कि' अव्यय नहीं आता किन्तु हिन्दी में आ सकता है।

अब ऊपर के वाक्यों का मिलान निम्नलिखित वाक्यों करो और समझो कि उन्हीं पाँच वाक्यों के कथन को किस प्रका प्रकट किया गया है:—

१—राम ने लक्ष्मण से कहा—मैंने तुमसे कहा था कि तु मुझको अत्यन्त प्रिय हो।

२—राम ने सीता से कहा—मैंने लक्ष्मण से कहा था कि मैं तुमको अत्यन्त प्रिय हूँ।

३—लक्ष्मण ने राम से कहा—तुमने मुझसे कहा था कि मैं तुमको अत्यन्त प्रिय हूँ।

४—लक्ष्मण ने सीता से कहा राम ने मुझसे कहा था कि मैं उनको अत्यन्त प्रिय हूँ।

५—लक्ष्मण ने सीता से कहा—राम ने तुमसे कहा था कि मैं उनको अत्यन्त प्रिय है।

—सीता ने लक्ष्मण से कहा—राम ने [illegible] कहा था कि
[तु]म्हें अत्यन्त प्रिय है।

—सीता ने भरत से कहा—राम ने तुमसे कहा था कि
[तु]म्हें अत्यन्त प्रिय है।

—भरत ने कौशल्या से कहा—राम ने लक्ष्मण से कहा था
[कि] तुम्हें अत्यन्त प्रिय है।

ऊपर के वाक्यों में लक्ष्मण के विषय में क्या प्रकट किया
गया है? यही कि लक्ष्मण राम को अत्यन्त प्रिय है।

कथन-प्रणाली में पहले के वाक्यों की अपेक्षा क्या अन्तर है?

पहले के वाक्यों में वक्ता ने एक वाक्य को ज्यों का त्यों प्रति-
[वक्ता] से कह दिया है, जब कि इन वाक्यों में वक्ता ने कही हुई
[बात] को और तद के वक्ता तथा प्रतिवक्ता का ध्यान [illegible]
[अ]पने शब्दों में कही गई है। प्रथम लिखे हुए वाक्यों को
[ह]म साक्षात्वर्णनयुक्त वाक्य कहते हैं, क्योंकि यहाँ कहे हुए
[श]ब्द ठीक वैसे के वैसे ही सीधे-सादे प्रकार से रख दिए गये हैं।
[दू]सरे प्रकार के वाक्य व्यस्तवर्णनयुक्त कहे जाते हैं क्योंकि
इसमें सुनी हुई बात हेर-फेर करके अन्य शब्दों में कही गई है।
कुछ व्याकरणकार इन दोनों प्रकार के कथनों को क्रमशः प्रत्यक्ष
तथा अप्रत्यक्ष उक्तियाँ भी कहते हैं।

व्यस्त वर्णन में प्रकट की हुई बात को अन्य प्रकार से भी
प्रकट कर सकते हैं:—

(१) राम ने लक्ष्मण से कहा कि मैंने तुमको अत्यन्त प्रिय
बनाया था।

(२) राम ने सीता से कहा कि मैंने तु[illegible] कि
लक्ष्मण मुझे अत्यन्त प्रिय है।

(३) सीता ने भरत से कहा कि [illegible] लक्ष्मण को [illegible] आदमन नित्य बनाते थे।

(४) भरत ने भगवान के प्रति राम के प्रताप [illegible] के शब्दों में कौशल्या से कहा।

अब बताओ कि सरल तथा व्यस्त वर्णनों में क्या अन्तर है?

यही कि सरल वर्णन में वक्ता के शब्द जैसे के तैसे रहें जब कि व्यस्त वर्णन में सार तो वही होता है परन्तु बात [illegible] के शब्दों में हेर-फेर करके कही जाती है। सरल में उद्धरण चिह्न में रखे जाते हैं किन्तु व्यस्त वर्णन में उद्धरण चिह्न नहीं प्रयुक्त होते।

(४)

(अ) भाग के आरम्भ में दिये हुए सरल वर्णन के दोनों उदाहरणों के उक्त भागों में आनेवाले पुरुष देखो। प्रथम वाक्य में 'तुम' (मध्यम पुरुष) प्रतिवक्ता के लिए और 'मुझे' (उत्तम पुरुष) वक्ता के लिए आया है। इसीप्रकार दूसरे वाक्यों में भी। तीसरे, चौथे और पाँचवें वाक्यों में 'वह' या 'उन' (अन्य पुरुष) वक्ता और प्रतिवक्ता के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष के लिए प्रयुक्त हुआ है।

तो सीखा कि सरल वर्णन में उक्त भाग के कर्त्ता आदि का पुरुष वक्ता, प्रतिवक्ता या अन्य पुरुष अथवा परोक्ष (अप्रस्तुत) वस्तु का द्योतक होता है और उसी के अनुसार रहता है।

सरल वर्णन में क्रियाओं का परिवर्त्तन क्यों हुआ है?

क्योंकि उनके कर्त्ता के पुरुष बदलते गये हैं।

यों क्रियाएँ भी उसी पुरुष के अनुसार होती हैं।

सर्वनामों के पुरुष परिवर्त्तन के सम्बन्ध में जो बातें सरल वर्णन के उदाहरणों से सीखते हो वही (अ) विभाग के व्यस्त वर्णन के उदाहरणों में भी समझो।

(स)

अ {
१—लड़का पिता को कहता है,
"मैं भोजन कर रहा हूँ"।
२—लड़का पिता को कहता है,
"मैंने भोजन कर लिया"।
३—लड़का पिता को कहता है,
"मैं भोजन करूँगा"।

१—लड़का पिता को कहेगा,
"मैं भोजन कर रहा हूँ"।
२—लड़का पिता को कहेगा,
"मैंने भोजन कर लिया"।
३—लड़का पिता को कहेगा,
"मैं भोजन करूँगा"।

१—लड़के ने पिता को कहा,
"मैं भोजन कर रहा हूँ"।
२—लड़के ने पिता को कहा,
"मैंने भोजन कर लिया"।
३—लड़के ने पिता को कहा,
"मैं भोजन करूँगा"।

१—लड़का पिता को बतलाता है कि
वह भोजन कर रहा है।
२—लड़का पिता को बतलाता है कि
उसने भोजन कर लिया।
३—लड़का पिता को बतलाता है कि
वह भोजन करेगा।

ई —
1—लड़का पिता को बतलावेगा कि वह भोजन कर रहा है।
2—लड़का पिता को बतलावेगा कि उसने भोजन कर लिया।
3—लड़का पिता को बतलावेगा कि वह भोजन कर रहा था।

ऊ —
1—लड़के ने पिता को बतलाया कि वह भोजन कर रहा था।
2—लड़के ने पिता को बतलाया कि उसने भोजन कर लिया था।
3—लड़के ने पिता को बतलाया कि वह भोजन करेगा।

ऊपर के छहों विभागों के वर्णन किस प्रकार के हैं?

क्रमशः अ, इ, उ के सरल वर्णन हैं और आ, ई, ऊ के व्यस्त हैं।

देखो कि ऊपर सरल के व्यस्त वर्णन बनाते समय किस काल की वाचक क्रिया में उक्त भाग की क्रिया के काल का रूपान्तर होता है?

केवल तभी जब कि वाचक-क्रिया भूतकाल की हो और उक्त क्रिया वर्तमान अथवा भूतकाल की हो।

सरल वर्णन में उक्त क्रिया वर्तमानकाल की हो तो व्यस्त वर्णन में किस काल का रूप होता है? अपूर्णभूत का।

उक्त क्रिया भूतकाल की हो तो व्यस्त वर्णन में किस काल का रूप पाते हो? पूर्णभूत का।

तो सीखा कि जब वाचक-क्रिया भूतकाल की हो तो उक्त क्रिया का वर्तमानकालिक रूप अपूर्णभूत बन जाता है और भूतकालिक रूप पूर्ण भूत हो जाता है।

३ { बुड्ढे ने कहा, "ईश्वर सबका रक्षक है"।
बुड्ढे ने बताया कि ईश्वर सबका रक्षक है।

४ { मोहन ने कहा, "आलसी मनुष्य नीरोग नहीं र
मोहन ने बताया कि आलसी मनुष्य नी
रहता है।

५ { श्याम ने कहा, "अपना शत्रु हमको प्यारा नहीं
श्याम ने बताया कि अपना शत्रु हमको प्य
लगता है।

ऊपर के वाक्यों में सरल से बने हुए व्यस्त कथनों
और बताओ कि ऊपर पढ़े हुए नियमों के अनुसार इ
त्रुटि है। यही कि वाचक क्रिया के भूतकाल में और उ
के वर्तमानकाल में होते हुए भी उक्त क्रिया का रूप नहीं
बताओ कि व्यस्त वर्णन में वक्ता के सम्मुख उक्त क्रि
बताई हुई परिस्थिति में क्या भेद आ गया है? को
अर्थात् सरल में कही हुई बात व्यस्त वर्णन में भी
सत्य है अथवा स्थायीरूपेण विश्वसत्य है।

तो सीखा कि जब तक उक्त क्रिया में किसी ऐसी
वर्णन होता है जो विश्वसत्य हो अथवा वक्ता के सम्म
[illegible] भूत
[illegible] क्रि
[illegible]

(ङ)

१ { राम ने कहा, "यह लकड़ी चन्दन की है।"
राम ने बताया कि यह लकड़ी चन्दन की [illegible]

२ { राम ने कहा, "मेरी कुटी यहाँ थी।"
राम ने बताया कि उसकी कुटी वहाँ थी

३ { राम ने कहा, "मैं यहाँ आ रहा हूँ।"
  राम ने बताया कि वह वहाँ आ रहा था।

४ { राम ने थानेदार से कहा "मैं आज आ रहा हूँ।"
  राम ने थानेदार को बताया कि वह उस दिन आ रहा था।

५ { राम ने कहा, "मैं कल गाँव को जाऊँगा।"
  राम ने बताया कि वह अगले दिन जायेगा।

६ { राम ने कहा "कल मैं लखनऊ गया था।"
  राम ने बताया कि वह पिछले दिन लखनऊ गया था।

ऊपर के चिह्नवाले शब्दों में सरल से व्यस्त कथन बनाते समय क्या परिवर्तन पाते हो? यही कि जो शब्द सरल कथन में काल अथवा स्थान का सामीप्य बताते हैं, वे व्यस्त कथन में दूरत्व प्रकट करने लगते हैं।

(ख)

१ { राम ने मुझसे कहा, "तुम क्या कर रहे हो?"
  राम ने मुझसे पूछा कि मैं क्या कर रहा था।

२ { यात्री ने कहा, "धर्मशाला कहाँ है?"
  यात्री ने धर्मशाला का पता पूछा।

३ { राम ने कहा, "इस समय घड़ी में कै बजे हैं?"
  राम ने पूछा कि उस समय घड़ी में कै बजे थे।

ऊपर प्रश्नार्थक वाक्यों को सरल से व्यस्त बनाना समझो और बतलाओ कि इन से व्यस्त बनाते समय क्या परिवर्तन पाते हो?

यही कि प्रश्नार्थक वाक्य को सरल से व्यस्त करते समय कहना क्रिया को 'पूछना' में बदल देते हैं और प्रश्नार्थक वाक्य को विधानार्थक बना देते हैं।

(ख)

१ { शिक्षक ने लड़के से कहा, "कमरे से बाहर जाओ।"
शिक्षक ने लड़के को कमरे से बाहर जाने की आज्ञा।

२ { हरी ने कहा, "और आओ।"
हरी ने और आने की बात कही।

३ { राजा ने कहा, "अपराधी को सामने लाओ।"
राजा ने अपराधी को सामने लाने का आदेश दिय

४ { श्यामा गुरुजी से बोली, "कृपया यहीं ठहरिये।"
श्यामा ने गुरुजी से यहीं ठहरने की प्रार्थना क

५ { सावित्री ने यम से कहा, "पति चिरायु हो।"
सावित्री ने यम से पति के चिरायु होने की प्रार्थना क

६ { ब्राह्मणों ने कहा, "दीर्घायु होओ।"
ब्राह्मणों ने दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया।

ऊपर के उदाहरणों से आज्ञा, प्रार्थना, आशीर्वाद आदि भावों को सूचित करनेवाले सरल कथन का व्यस्त बनाना सीखो।

व्यस्त कथन में उक्त भागों की क्रियाओं में क्या पाते हो? उन क्रियाओं को क्रियार्थक संज्ञाओं का रूप मिल जाता है वाचक क्रिया में क्या परिवर्तन होता है?

यही कि वह लोप हो जाती है और उक्त भाग के भाव अनुसार भावसूचक बन जाती है; अर्थात् आज्ञा में आज्ञा दे॰, आदेश देना, *प्रार्थना में प्रार्थना करना* और आशीर्वाद में आशीर्वाद देना इत्यादि।

(ग)

{ राम ने कहा, "शोक! मेरे पिता न रहे।"
राम ने अपने पिता के न रहने पर शोक प्रकट किया।

२ { बाली ने कहा "ओहो! मैं कितना वीर हूँ।"
बाली ने अपनी वीरता पर (वीर होने पर) अभिमान प्रकट किया (घमण्ड दिखाया, दर्प प्रकट किया)।

३ { गुरुजी बोले, "शाबाश! तूने राम को हरा दिया।"
गुरुजी ने उसे राम के हराने पर शाबाशी दी।

४ { लड़का बोला, "अरे! हमारी खबर केवल एक मिनिट में दस हजार मील पहुँच जाती है!"
लड़के ने अपनी खबर केवल एक मिनिट में दस हजार मील पहुँचने पर आश्चर्य प्रकट किया।

५ { मोहन ने कहा, "धन्यवाद! आपने मुझे काम के समय सहायता दी"।
मोहन ने उन्हें अपने काम के समय सहायता देने पर धन्यवाद दिया।

ऊपर के वाक्यों में उक्त भाग किस प्रकार के हैं?

विस्मयादिबोधक।

इनका व्यस्त वर्णन बनाते समय क्या परिवर्तन पाते हो?

यही कि विस्मयादिबोधक चिन्ह और शब्द लुप्त करके [विस्]मयादिबोधक क्रिया बना दी जाती है और उक्त भाग में आई हुई क्रिया को क्रियार्थक संज्ञा बनाकर भाव प्रकट कर देते हैं।

(घ)

१ { अध्यापक ने कहा, "मोहन! पुस्तक पढ़ो।"
अध्यापक ने मोहन को सङ्केत करके पुस्तक पढ़ने को कहा।

२ { दुखिया ने कहा, "हे भगवान! इस संकट से उबारो।"
दुखिया ने भगवान को पुकारकर इस संकट से उबारने की प्रार्थना की।

८—राम, कृष्ण और वाराह अवतार हुए हैं।

९—संसार के विकार काम, क्रोध, मद और लोभ हैं।

१०—नित्य स्कूल आना, फिर छः घण्टे पढ़ना और फि लौट जाना यही मेरी दिनचर्या है।

ऊपर के वाक्यों में विराम चिह्न देखो।

कितने प्रकार के चिह्न प्रयुक्त हुए हैं?

दो। एक तो खड़ी लकीर और दूसरा

खड़ी लकीर क्या बतलाती है?

यही कि वहाँ पर वाक्य समाप्त होता है। एक बात पूरी होती है।

दूसरा चिह्न क्या बतलाता है?

यही कि वाक्य की एक बात होने से अन्य बातों से अलग इतने को समझना अधिक आवश्यक है।

खड़ी लकीर को पूर्ण विराम कहते हैं क्योंकि पूरी बात समाप्त होने से वहाँ पूरा विश्राम हो सकता है।

, को अर्द्ध विराम कहते हैं और वहाँ पूर्ण विराम से आधे समय तक रुका जाता है।

बताओ कि अर्द्ध-विराम का प्रयोग कहाँ कहाँ विशेषतर से हुआ है?

आश्रित उपवाक्यों और प्रधान वाक्यांशों के बीच में, संबोधनात्मक शब्दों के बाद, कई बातों में से प्रत्येक के बाद उन्हें अलग-अलग बताने के लिए, वाक्यांशों को विभक्त करने के लिए, तथा अवधारण के लिए।

नीचे के विराम चिह्न देखो:—

१—(अ) भोजन मिला था।

(ब) क्या भोजन मिला था?

(स) क्या भोजन मिला था।

१—(अ) सुन्दर दृश्य है।
(ब) क्या सुन्दर दृश्य है?
(स) क्या सुन्दर दृश्य है!

२—(अ) बुरे दिन आ गये हैं।
(ब) बुरे दिन आ गये हैं?
(स) बुरे दिन आ गये हैं! जान खटके में है!!

ऊपर के उदाहरणों में 'अ' खण्ड के चिह्न क्या बताते हैं?

यही कि बातों का साधारण कथनमात्र है।

ऊपर के उदाहरणों में 'ब' खण्ड के वाक्यों से क्या प्रकट होता है?

यही कि एक बात पूछी गई है।

प्रश्नवाचक वाक्य का अन्तिम विराम क्या है? (?)

इसको प्रश्नवाचक चिह्न कहते हैं।

'स' खण्डों के वाक्यों से क्या प्रकट होता है?

यही कि उनसे विस्मय या हर्ष प्रकट होता है।

इसीलिए इसे विस्मयादि या संबोधन या इंगितसूचक चिन्ह कहते हैं।

उक्त चिह्न का रूप क्या है? —!

१—कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि, "कर्तव्य करते समय अपने पराये का मोह उचित नहीं।"

२—"अभी जल्दी ही क्या है" कहकर पिताजी दफ्तर गये।

३—उन्हें सूचित किया गया है कि "डाकू आनेवाली है।"

४—प्रकाशित हुआ है कि "महाराजा जार्ज पंचम का देहावसान हो गया।"

५—"बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।" "रामायण" में।

६—शाकुन्तल की तुलना का संसार में कोई काव्य नहीं।

-मैंने "आज" में "गोविन्दगान" का विज्ञापन देखा।

—उसका नाम है "रामरतन"।

—तुमने "प्रताप" व "प्रताप" पढ़ा है.

ऊपर के उदाहरणों में अर्द्ध विराम के उलटे चिह्न देखो।

इनका प्रयोग किस प्रकार किया गया है ?

शब्दों तथा वाक्यांशों और वाक्यों के पूर्व तथा उपरान्त दो-दो उलटे अर्द्ध विरामों के चिह्न हैं।

जिन वाक्यों के साथ इनका प्रयोग किया गया है वे किस-किस प्रकार के वाक्य हैं ?

ये सभी कहना, जानना और सूचित करना आदि क्रियाओं के कर्मसम्बन्धी आश्रित उपवाक्य हैं।

जिन शब्दों के साथ ये आये हैं वे क्या बतलाते हैं ?

किसी कवि, ग्रंथ, पत्र, शीर्षक, व्यक्ति, त्रुटि आदि के नाम हैं।

१—नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दो :—

(अ) तुम्हारा क्या नाम है ?

(ब) तुम्हारा निवासस्थान कहाँ है ?

२—तुम्हारे विषय में मैं ये बातें जानता हूँ :—

(अ) तुम चौथे दर्जे में पढ़ते थे।

(ब) तुम्हारा बड़ा भाई मिल में बाबू है।

३—क्रियायें तीन प्रकार की होती हैं :—

सकर्मक, अकर्मक और अपूर्ण।

ऊपर के उदाहरणों में प्रथम वाक्य को पढ़ो और बताओ उनमें अगले वाक्यों के शब्दों के विषय में क्या कहा गया है ?

उनका संकेत किया गया है और बताया गया है कि आगे का विवरण किस प्रकार का है।

आगे के विवरण के पूर्व वाक्य के अन्त में क्या चिन्ह प्रयुक्त है ? :—इसको अंग्रेजी में कोलन और डैश कहते हैं।

इस चिन्ह को हिन्दी में विवरण चिन्ह कहते हैं, क्योंकि इसके आगे किसी प्रकार का विवरण दिया जाता है।

पद-कमल, कानपुर-निवासी, रवि-चन्द्र, तरणि-तनूजा-तट, भाषा-व्याकरण।

ऊपर के उदाहरणों में लिखे हुए शब्द एक दूसरे से किस प्रकार सम्बन्धित हैं ? समासों के द्वारा।

इस सामासिक सम्बन्ध को प्रकट करने के लिए किस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है ? (-) इस छोटी पड़ी लकीर को अंग्रेजी में हाइफ़न और हिन्दी में सामासिक चिन्ह कहते हैं।

(१) औरंगजेब की राजनीति—धार्मिक नीति से भिन्न—बहुत दृढ़ थी।

(२) सभी विद्यार्थी-सिवाय दो चार के-प्रार्थना करने गये।

(३) हम यही—कि गरीबों का भला हो—चाहते थे।

ऊपर के उदाहरण लम्बी लकीर क्या प्रकट करती है ?

यही कि वाक्य के तारतम्य को न तोड़कर बात के सिलसिले में कुछ ऐसी बात का निर्देश हुआ है जो गौण किन्तु आवश्यक है। इस चिन्ह को अंग्रेजी में डैश और हिन्दी में निर्देशक चिन्ह कहते हैं।

संयुक्त क्रियाएं सहायक क्रियाओं (होना, पड़ना, चाहिये) से सा जोड़कर बनाई जाती हैं।

अक्ष (आँखों) के सम् (सामने) जो कुछ हो 'समक्ष' हो जाता है।

विस्मयसूचक चिन्ह (!) विस्मयादि [illegible] के आगे तथा विस्मयसूचक वाक्यों के आगे आता है।

सागरों (राजा सागर के पुत्रों) [illegible] हुए स्थान में जल भरने पर सागर बना।

ऊपर के वाक्यों में [illegible] चिन्ह प्रयुक्त है ? () इन वाक्यों में () [illegible] में प्रयुक्त किया गया है ? कुछ विशेष शब्दों [illegible] उनको विशेषतया के बताने के लिए।

दोनों [illegible] बनाई हुई [illegible] [illegible] से [illegible]

[illegible]

वाक्य की क्रिया मिलाना कठिन हो जाता क्योंकि ये बातें विषयान्तरित कर देतीं।

गणित में इसका चिन्ह किसलिए होता है ?

एक प्रकार के अंकसमूहों को एकत्र करने के लिए।

यहाँ क्या काम करता है ?

यहाँ यह शब्दविशेष को गौरवान्वित करनेवाले शब्दों या अर्थों को एकत्र रखना है।

इसको भाषा में भी कोष्ठक चिन्ह कहते हैं।

अभ्यास

१—निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामों का प्रयोग करो :—

(क) पूर्वोक्त रामायण ग्रन्थ में भी गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपनी प्रतिभा काव्य-कला विज्ञता और भगवद्भक्ति का पूर्ण परिचय दिया है किन्तु अनेक विद्वान् उनकी विनय-पत्रिका को अधिक चमत्कारयुक्त रचना मानते हैं क्योंकि वह रामायण की अपेक्षा काव्य-दृष्टि से न्यून नहीं यदि एक में कर्म ज्ञान और भक्ति का उपदेश है तो दूसरी में इन तीनों का साक्षात् निदर्शन किया गया है।

(ख) प्रताप ने कहा ऐ वीरो क्या रण से भाग रहे हो वीर लोग कभी युद्ध में पीठ नहीं दिखाते।

(ग) किसी कवि ने ठीक कहा है कि विपत्ति में कोई किसी का साथ नहीं देता देखो अँधेरे में छाया भी मनुष्य का साथ छोड़ देती है तब बतलाइये हम ईश्वर के सिवाय किसे अपना कहें।

(घ) वह ईश्वर कैसा होगा जो संसार को अपनी नाट्यशाला बनाये स्वयं सदा अप्रकट रूप से खेल दिखलाता रहता है जिसने अपनी अद्भुत कारीगरी का नमूना विश्व के छोटे-छोटे कण में भी दिखला रखा है ये आकाशगामी नक्षत्र भी तो उसी की रचनाएँ हैं उसी को विधाता कहो या आदि शक्ति।

२—विराम चिन्हों के प्रयोग से क्या लाभ हैं ?

३—विवरणचिन्ह तथा उद्धरणचिन्ह को कब प्रयोग में लाते हो ? अपने वाक्य बनाकर इनका प्रयोग बताओ।

अध्याय १७

अलङ्कार

(अ)

१—रामचन्द्र में धर्म, नीति, सत्य, धैर्य, प्रेम, चरित्र आदि सब गुण थे।

२—फूल में कीड़ा न होना चाहिये था।

३—यमुना के किनारे घने तमाल के पेड़ हैं।

४—जिसे दूसरे की कविता बुरी नहीं लगती वही हृदय हैं।

(आ)

५—चन्द्रमा में काला दाग है।

६—हे भगवन्, आकर दर्शन दो और हमारे हृदय में बैठो।

७—सज्जन मीठी बातें बोलते हैं, किन्तु दुष्ट कठोर।

(इ)

१—धरमधुरीन, धीर, नयनागर।
सत्य सनेह शील सुख सागर।

२—काले कुत्सित कीट का कुसुम में कोई नहीं काम था।

३—तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।

४—मन जिसे मन में पर काव्य की रुचिरता चिरताप-करी न हो।

(ई)

५—यह प्रभु गरल बन्धु शशि केरा।
अति प्रीयतम उर दीन्ह बसेरा।
कह हनुमन्त सुनहु प्रभु। ससि तुम्हारा प्रिय दास।
तव मूरति बिधु उर बसति। सोइ श्यामता भास।

६—पाँवड़े पताल बिछि, धारो पग लोचनों पै
मोहन बिराजो बिछी पाँवड़ी यह मन की।

७ सुधा सन्त के बचन सों, बचन सुधा सम जान।
[illegible] के विष सदृश, [illegible] बचन समान।

ऊपर के (अ) (आ) विभागों में दिये हुए गद्य वाक्यों को पढ़ो। फिर क्रमशः उन्हीं भावों से युक्त पद्यरचनाओं को (इ) (ई) विभागों में पढ़ो। दोनों के कथन में क्या अन्तर पाते हो?

यही कि (इ) (ई) विभाग के वाक्यों में विशेष रमणीयता है, शोभा है, चमत्कार है।

(इ) खण्ड में यह चमत्कार किसके आश्रित है?

शब्दों या शब्दखण्डों के।

(ई) खण्ड में यह चमत्कार किसके आश्रित है? अर्थ के।

इस प्रकार वाक्य की शोभा के लिए शब्दों या अर्थों को विशेष प्रकार प्रयुक्तकर पैदा किया हुआ चमत्कार अलङ्कार कहलाता है।

यह अलङ्कार जो शब्दों या शब्दखण्डों का आश्रित हो शब्दालङ्कार है और अर्थ का आश्रय करनेवाला अलङ्कार अर्थालङ्कार है।

क —

१—राधा के वर बैन सुनि, चीनी चकित सुभाय।
दाख दुखी मिसरी मुरी, सुधा रही सकुचाय॥

२—बस सिय आनि सुनहु सिख भाई।
करहु मातु पितु पद सेवकाई॥

३—पावन तुम्हीं पतित के, भावुक हो भावना के।
शंकर हो किंकरों के, अवधेश ईश्व हमारा॥

४—नन्द के नन्दन दुःख-निकन्दन,
श्रीमद्वल्लभ [illegible]
सेवक [illegible] के [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

बन्दन नौ इन्दु है तुमको पद
है अरविन्द लजावन हारे ॥

ख — ५—विकल विकलता विहूँदिर धारत वदन विकास ।
जन देखहुँ यहाँ विलद वाली बुद्धि विलास ॥

६—चंदन चकोर में न कौरति कुमोदिनी में,
कुन्द में न कास में कपास में न कुन्द में ।
कहै पदमाकर त्यों हंस में न हास हू में,
हिम में न हीरे हारि हीरन के बुन्द में ॥
ऊँची छवि गंग की तरंगन में ताकियत,
देखा छवि छोर में न छीरधि के तुन्द में ।
चैत में न चैत चाँदनी हू में चमेलिन में,
चन्दन में न है न चन्द्रचूड़ में न चन्द में ॥

ग — ७—जलद जलधि जलयुक्त है तू कत करत गुमान ।
८—वे घर हैं वन ही सदा जो हों बन्धुवियोग ॥
वे घर हैं वन ही सदा जो नहिं बन्धु वियोग ।
९—पराधीन जे नर नहीं नरक सरग ता हेत ।
पराधीन जे नर नहीं नरक सरगता हेत ॥

ऊपर के उदाहरणों में शब्दखण्डों, शब्दों या शब्दसमूहों में क्या विशेष चमत्कार पाते हो ?

यही कि वे बार-बार रखे गये हैं—उनकी आवृत्ति हुई है, एकबार आकर फिर आये हैं ।

इस प्रकार शब्दों, शब्दखण्डों या शब्दसमूहों के पुनरावर्तन से बननेवाले अलङ्कार को अनुप्रास कहते हैं ।

ऊपर दिये हुए उदाहरणों में से प्रथम तीन देखो और बतलाओ कि पुनरावर्त्तन किस का है और कितनी बार है ?

शब्दखण्डों की केवल एक बार पुनरावृत्ति हुई ।

उन्हें भिन्न बतलाकर उनकी समानता बतलाते हैं, उनं एकता नहीं रहती।

क्या वास्तव में उपमेय और उपमान एक वस्तु होते हैं नहीं,

यों वास्तव में अभेद न होने पर भी जब उपमेय उपमान का आरोप कर दिया जाता है और उन्हें एक बतलाया जाता है वहाँ रूपक अलंकार होता है।

नीचे के उदाहरणों में उपमान तथा उपमेय का अभेद देख कर रूपक अलङ्कार समझो:—

१—रसना नदी जिनकी बहाती नाम गंगाधार है।
जिनकी हृदयतन्त्री सुनाती रामलय झंकार है॥
जिन भक्तअलि की कृष्ण के पदपद्म में गुञ्जार है।
उन साधु पुरुषों के करों में गान यह उपहार है॥

२—पाकर वियोग-आतप निर्जीव जो हुई थी।
आशा-कली खिली वह पी रूप-रस की धारा॥

३—मृगलोचन श्याम बुलाऊँ तुझे,
मन मन्दिर में बिठलाऊँ तुझे।

४—ऋधि सिधि संपत्ति नदी सुहाई।
उमगि अवध अंबुधि कहँ आई।
मनिगन पुरनर नारि सुजाती।
शुचि अमोल सुन्दर सब भाँती।

५—चिन्ता साँपिनि काहि न खाया।
को जग जाहि न व्यापी माया।
कीट मनोरथ दारु सरीरा।
जेहि न लाग घुन को अस धीरा।

(२)

१—बालक भरत को निर्भय विचरते देख वन्य पशु समझे कि सिंह आ गया।

२—अनेक मनुष्यों को मोहन का आलाप सुनकर यह भ्रम
था कि तानसेन गा रहा है।

३—मोती जानकर जब एक लालची कृष्ण के दाँतों की ओर
ताका तो उन्होंने अपना मुँह बन्द कर लिया।

इन उदाहरणों में उपमेय तथा उपमान का क्या सम्बन्ध है?

इनमें उपमेय को भ्रम से उपमान समझा गया है।

यों भ्रमवश उपमेय को उपमान समझ लेना भ्रम अथवा
भ्रान्तिमान् कहलाता है।

रूपक में और भ्रम में क्या अन्तर पाते हो?

यही कि रूपक में जान-बूझकर अभेद कहा गया है।
किन्तु भ्रम में भ्रम के कारण अभेद हो गया है।

निम्नलिखित उदाहरणों से भ्रम अलकार को अच्छी तरह
समझ लो: -

१—वृन्दावन विहरत फिरैं राधानंदकिशोर।
नीरद दामिनि जानि सँग डोलैं बोलैं मोर॥

२—दूषित कनक रुचि जानकी लखि राघव सँग जात।
पंक्ष प्रफुल्लित मुदित अति चातक पीत लखात॥

३—घेई सुरतरु प्रफुल्लित फुलवारिन में,
वेई सरवर हंस बोलत मिलन को।
वेई हेम हिरन दिसान दहलीजन में,
वेई गजराज हय गरज मिलन को॥
द्वार द्वार छड़ी लियें द्वार पौरिया जो खड़े
बोलत मरोर बरजोर त्यों मिलन को।
द्वारका तें चल्यो भूलि द्वारका ही आयो नाथ
माँगियो न मो पै चार चाउर गिलन को।

(४)

१ बालक भरत को देखकर दुष्यन्त सोचने लगे कि क्या

यह कश्यप ऋषि का तेज है, अथवा स्वयं अग्नि है, अथवा मूर्तिमान् वनदेवता हैं।

२—मोहन का आलाप सुनकर लोगों को सन्देह हुआ कि हो न हो यह तानसेन है अथवा गन्धर्व है।

३—कृष्ण के दाँतों को देखकर लोग निश्चय न कर सके कि वे मोती हैं या कुन्द की कलियाँ हैं।

ऊपर के उदाहरणों में उपमेय के विषय में क्या विशेष बात पाते हो? यही कि उपमेय के विषय में यह निश्चय नहीं है कि वह क्या है अतः उसे उपमान मान लेते हैं।

यों निश्चय न होने के कारण जहाँ उपमेय का वर्णन उपमान के रूप में किया जाय वहाँ सन्देह अलंकार होता है।

सन्देह तथा भ्रम में क्या अन्तर पाते हो?

यही कि सन्देह में उपमेय को उपमान मानते हुए भी निश्चय नहीं होता, विकल्प बना रहता है; किन्तु भ्रम में उपमेय को—ठीक न होते हुए भी उस समय—निश्चयपूर्वक उपमान मान लिया जाता है।

नीचे दिये हुए उदाहरणों में सन्देह अलंकार समझो और इनका मिलान भ्रम के उदाहरणों से तुलनात्मक दृष्टि से करो:—

१—की तुम तीनि देव महँ कोऊ, नर-नारायण की तुम दोऊ।

२—कीधौं सुरराज के समाज की समृद्धि यह
कीधौं ऋद्धि सिद्धि राज राज-राजधानी की।
कीधौं वेद बाँचिवे की स्वच्छ परिपाटी पटु
कीधौं स्वर ब्रह्म को प्रतच्छ प्रतिमानी की॥
कीधौं चारुतान की वसी करन-विद्या कीधौं
विजय पताका गाढ़ी गन्धर्व गुमानी की।
रागन की रानी ठकुरानी तीन ग्रामन की
बानी बीन बानी गुरुबानी कै सुबानी की॥

(५)

१—यह बालक भरत नहीं सिंह है।
२—यह मोहन नहीं तानसेन है।
३—कृष्ण के ये दाँत नहीं मोती हैं।
१—यह तो बालक भरत के बहाने सिंह आ गया।
२—मोहन के छल से तानसेन गा रहा है।
३—ब्रह्मा ने दाँतों के व्याज से मोती लगाये हैं।

इन उदाहरणों में उपमेय के लिए क्या कहा गया है?

उपमेय का निषेध बताया गया है। यह कहा गया है कि वह पमेय नहीं है। उपमेय छिपाया गया है।

उपमेय का निषेध करने से क्या लाभ है?

उपमान को सिद्ध करना है।

यों उपमेय का निषेध करके उपमान का स्थापित करने अपह्नुति अलंकार होता है।

रूपक के लक्षणों से अपन्हुति की तुलनाकर बतलाओ कि ... दोनों में क्या भेद है?

यही कि रूपक में उपमेय और उपमान का अभेद होता है किन्तु उपमेय का निषेध नहीं।

अपन्हुति में भी उपमेय और उपमान का अभेद होता है किन्तु उपमेय का निषेध करके।

निम्नलिखित उदाहरणों में अपन्हुति को भली-भाँति समझो—

१—मैं जो कहा रघुबीर कृपाला।
बन्धु न होय मोर यह काला।
२—लसी नरेस बात फुरि साँची।
तिय मिस मीचु सीस पर नाची।
३—सुरत बाल रवि सम लाल होकर ज्वाला मा बोधित हुआ।
प्रलयार्थ उनके मिस वहाँ क्या काल ही क्रोधित हुआ।

४—शारदे मरालिनि विरह निज वीणा ले
मानस नहीं है यह शुद्ध मानसर है।
५—देह के बहाने बना जीव कारागार है।
६—है न सुधा यह है सुधा संगति साधु-समाज।

(६)

१—बालक भरत मानो सिंह है।
२—मोहन का आलाप सुनकर मालूम होता है कि मानो तानसेन गा रहा है।
३—कृष्ण के दाँत ऐसे सुशोभित हैं जैसे मोती हों।
इन उदाहरणों में उपमेय तथा उपमान का परस्पर क्या सम्बन्ध है?
यही कि उपमेय में उपमान की संभावना की गई।
क्या उपमेय तथा उपमान एक हैं? नहीं।
फिर यह संभावना क्यों की गई है? समानता के कारण।
भरत में और सिंह में इतनी समानता है कि हम उसे सिंह-रूप देखने की इच्छा रखते हैं। दोनों को भिन्न जानते हुए भी बलपूर्वक उपमेय में उपमान की संभावना करते हैं।

यों परस्पर समानता के कारण उपमेय में उपमान की सम्भावना करने को उत्प्रेक्षा कहते हैं।

रूपक और उत्प्रेक्षा में क्या अन्तर पाते हो?
यही कि रूपक में उपमेय और उपमान का अभेद रहता है किन्तु उत्प्रेक्षा में भेद जानते हुए भी अभेद की संभावना की जाती है।
नीचे दिये हुए उदाहरणों में उत्प्रेक्षा को भली भांति समझो—
१—लता ओट ते प्रगट भे तेहि औसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग विमल बिधु जलद-पटल बिलगाइ॥
२—सोहत जनु जुग जलज सनाला।
ससिहिं सभीत देत जयमाला।

३—[illegible]

[illegible] ॥

४—[illegible] ।

५—[illegible] ;

मानहुँ [illegible] ।

६—[illegible] है।

[illegible] है।

(ख)

१—दशरथ भरत अपनी शीलता से और सिंह पराक्रम से सुशोभित है। अर्थात्, भरत और सिंह वीर हैं।

२—मोहन और मानसेन के आलाप अपनी मिठास से मनोहर हैं।

३—कृष्ण के दाँत और मोती उज्ज्वल हैं।

इन उदाहरणों में उपमेय तथा उपमान किस प्रकार एक दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं ? समान गुण या धर्म के द्वारा। जो गुण भरत का है वही सिंह का है, जो मोहन के आलाप का है वही मानसेन के आलाप का, और जो दाँतों का है वही मोतियों का।

यों एक धर्म या गुण द्वारा उपमेय तथा उपमान का सम्बन्ध होने पर दीपक अलंकार होता है।

नीचे के उदाहरणों से इसे और भी समझो:—

१—पानु के क्यों है घटाये घटै नहिं,
सागर ज्यों गुन आगर मानी।

२—भूपण विन न बिराजई, कविता, वनिता, मित्र।

३—गज मद सों नृप तेज सों, सोभा लहत बनाय।

४—बलगर्वित शिशुपाल यह अजहूँ जगत सतात।
सती नार निश्चल प्रकृति परलोकहु सँग जात॥

(८)

१—बालक भरत की वीरता का वर्णन ब्रह्मा भी नहीं कर सकते। अथवा बालक भरत के बाण उठाते ही दुष्ट जन यमलोक पहुँच जाते हैं।

२—वास्तव में मोहन गन्धर्व है।

३—कृष्ण के मुख मे मोती गुँथे हैं।

इन उदाहरणों में उपमेयों के विषय में कैसी बातें कही गई हैं? ऐसी जो लौकिक सीमा का उल्लंघन करती हैं।

ऐसी बातें क्यों कही गई हैं?

इसलिए कि उपमेय के गुणों की अतिशयता बतलानी है।

इस प्रकार की अलौकिक उक्ति को जो अतिशयता के कारण की जाय उसे अतिशयोक्ति कहते हैं।

इसके अन्य उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

१—कैकयी के कहत ही रामगमन की बात।
   नृप दशरथ के मांहि छिन सूख गये सब गात॥

२—उड़ता संग गजकर कमल पड़ा धराधर हाथ।
   कर न चक्र ह नक्र शिर धरतें बिलगयो साथ॥

३—कलि कँगूरे अति उच्च निसाना।
   जिन महँ अटकत बिबुध-बिमाना॥

४—सुनतहिं प्रभु-मन पातक भागे।

५—जा सम्पदा नीच गृह सोहा,
   सो विलोकि सुर-नायक मोहा।

(९)

१—वीरता में भरत की बराबर सिंह है। अथवा, बालक भरत की समता क्या सिंह कर सकता है?

२— मोहन के आकार की भाँति ही तानसेन का आकार था, अथवा, मोहन के आकार के सामने तानसेन का आकार फीका है।

३—कृष्ण के दाँतों के सामने मोती व्यर्थ गर्व करते हैं; अथवा, कृष्ण के दाँतों की तरह मोती होते हैं।

इन उदाहरणों में उपमेय और उपमान के प्राकृत सम्बन्ध में [illegible] अन्तर पाते हो ? यही कि इनमें उपमेय तथा उपमान का [illegible]परीत सम्बन्ध है। उपमान उपमेय कल्पित कर लिया गया है। [illegible]थवा उपमेय द्वारा उपमान का अनादर किया गया है।

इस प्रकार उपमेय तथा उपमान के प्राकृत सम्बन्ध को [illegible]परीतकर, उपमान की अपेक्षा उपमेय को अधिक [illegible]रव देने में प्रतीप अलंकार होता है।

नीचे के उदाहरणों से इसे भी स्पष्टतया समझो :—

१—अवनि हिमाद्रि समुद्र जनि करहु वृथा अभिमान।
सांत धीर गंभीर हैं तुम सन राम सुजान॥

२—दान मांझ तरुराज अरु मान मांझ कुरुराज।
नृप जसवँत तो सम कहत ते कवि निपट निकाज॥

३—कहैं मतिराम और जाचक जहान सब
एक दानि छत्रसाल नंदन को कर है।
राव भाव सिंह जू के दान की बड़ाई देखि
कहा कामधेनु है कहू न सुरतरु है॥

४—हालाहल विष गरल पर हौं ही कठिन कृपान।
है न कहा तेरे सरस खलजन वचन निदान॥

५—हुए न हैं न होहिंगे न इन्द्र इन्द्रजीत से।

(१८)

१—बालक अथवा सिंह से बढ़कर है क्योंकि सिंह तो मूर्ख पशु है, परन्तु यह बुद्धिमान

२—मोहन का व्याख्यान [illegible] के व्याख्यान की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है, क्योंकि [illegible] अपनी सभा को [illegible] परन्तु मोहन ने सारा [illegible] को मुग्ध कर दिया।

३ – कृष्ण के दाँतों की समानता सीप से पैदा होनेवाला नीच मोती क्या कर सकता है।

इन उदाहरणों में प्रतीप की अपेक्षा क्या विशेषता पाते हो? यही कि उपमान की अपेक्षा उपमेय का उत्कर्ष बताते समय उपमान की हेयता का कारण अथवा उपमेय के गौरव का कारण बता दिया गया है।

प्रतीप के उदाहरणों से इन उदाहरणों की तुलना कर समझो कि प्रतीप में उपमेय को उपमान की अपेक्षा बड़ा देते हैं किन्तु उपमेय का गुणाधिक्य नहीं बताते। इन उदाहरणों में गुण की अधिकतारूप उत्कर्ष वर्णन किया गया है और उपमेय को उपमान की अपेक्षा बड़ा दिया गया है।

इस प्रकार उपमान की अपेक्षा गुणाधिक्य में उपमेय का उत्कर्ष दिखाना व्यतिरेक अलङ्कार होता है।

निम्नलिखित उदाहरणों में इसे भली-भाँति समझो:—

१—गिरा मुखर तन अरध भवानी।
   रति अति दुखित अतनु पति जानी॥
   विष बारुणी बन्धु प्रिय जेही।
   कहिय रमा सम किमि बैदेही॥

२—मुख है अम्बुज सो सखी मीठी बात विशेष।

३—शारद बरसत बारि नृप तू बरसत घनसारा।
   वह कृष्णनिशि में मलिन पै तेरो सदा प्रकास॥

४—सिय मुख शारद कमल सम किमि कहि जाय।
   निशि मलीन वह यह निशिदिन विकसाय॥

५—राधामुख को चन्द्र इव कहत जुरे मतिमंद।
   निष्कलंक है यह सदा वह सकलंक मलिन्द॥

(११)

१—बालक मरत वीर है, सूर्यवंश में कभी कायर पैदा नहीं होते।

४—यमक और लाटानुप्रास में भेद बताओ।

५—इन उदाहरणों में कौन अलंकार है? कारण समेत बताओ:—

१—जो चाहो चटक न घटै, मैलो होय न मित्त।
रज राजस न छुवाइये, नेह चीकने चित्त॥

२—कलित-कुंचित-केश-कलाप से,
मधुर राशि पराजित सी हुई।

३—सुरसरि रावरी करैगो सुर-सरि कौन,
आइ कै सरस्वति हूँ तोहि को भजै लगी।
अधम उधारति त्यों धारति है पापिन को,
सुकृति सुधारि सुधा धारि उपजै लगी॥

६—श्लेषालंकार किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताओ।

७—'पीपर-पात सरिस मन डोला'—इसमें कौन अलंकार है? इसके प्रत्येक अङ्ग का नाम बताओ।

८—पूर्णोपमा और लुप्तोपमा में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर समझाओ।

९—'सुन्दर नंदकिशोर से सुन्दर नंदकिशोर' में कौन अलंकार है। इसके लक्षण उदाहरण समेत बताओ।

१०—'राम-कथा सुन्दर करतारी। संशय विहँग उड़ावन हारी।' में कौन अलंकार है, और क्यों?

११—भ्रम और सन्देह में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर समझाओ।

१२—'नहीं शक्र सुरपति अहै सुरपति नन्द कुमार' में कौन अलंकार है! इसका लक्षण स्पष्टतया बताओ।

१३—उत्प्रेक्षा को कैसे पहचानते हो? इसकी परिभाषा बताओ और उदाहरण दो।

१४—'काहू के क्यों हूँ घटाये घटै नहिं, सागर औ गुन-आगर प्रानी'। इसमें पृथक् पृथक् उपमान तथा उपमेय बताओ और देखो कि दोनों का धर्म क्या है? ऐसे अलंकार को क्या कहते हो?

पुनरावृत्ति

१—व्याकरण पढ़ने से क्या लाभ है ?

२—भाषा में कैसे शब्दों का प्रयोग होता है ? दूसरा भेद भी उदाहरण देकर बताओ ।

३—ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत क्या हैं ? व्यञ्जन और स्वरों भेद है ?

४—उच्चारण के विचार से प्रत्येक वर्ण का स्थान ब

५—ऊष्म, अन्तःस्थ और स्पर्श वर्णों से क्या समझ इनके ये नाम क्यों हैं ?

६—सानुनासिक वर्ण कौन कौन से हैं ? इनके स्थान अलग अलग क्या हैं ?

७—हिन्दी भाषा कैसे शब्दों से बनी है ? उदाहरण दो ।

८—योगरूढ़ि शब्दों में कौन समास होता है ? सहित बताओ ।

९—सन्धि किसे कहते हैं ? यह कितने प्रकार की

१०—नदी + इन्द्र, महा + इन्द्र, महा + ऐश्वर्य, दिक् + अम्बर, जगत् + नाथ, सत् + ज्वल, बृहत् + शास्त्र, निः + आशा, मनः + हर । सन्धि करो और वे नियम बताओ जिनके सन्धियाँ करते हो ।

११—प्रत्यय कितने प्रकार के हैं ? प्रत्यय और उपस अन्तर है ? उदाहरण देकर बताओ ।

१२—कृदन्त प्रत्ययों से बनी हुई कुछ भाववाचक संज्ञा विशेषणों के उदाहरण दो ।

१३—तद्धित और कृदन्त में क्या भेद है ? उदाहरण देकर

२७—द्विकर्मक, अपूर्ण, संयुक्त, और पूर्वकालिक क्रियाओं से क्या समझते हो ? उदाहरण देकर समझाओ।

२८—कर्म कितने प्रकार के हैं ? प्रत्येक का उदाहरण दो।

२६—स्वजातीय क्रिया और कर्म क्या हैं ?

३०—किसी क्रिया को उदाहरण-स्वरूप लेकर उससे क्रियावाचक विशेषण बनाओ। बताओ इसके भिन्न प्रकारों में क्या अन्तर है ?

३१—वाक्य कितने हैं ? प्रत्येक वाक्य की विशेषता उदाहरण समेत बताओ।

३२—'प्रायः कर्त्ता की असमर्थता बताने में भाववाचक का प्रयोग होता है'—इसे उदाहरण देकर समझाओ।

३३—प्रत्यक्ष और परोक्ष विधि के प्रयोग अपने वाक्यों में करो और उनका अन्तर बताओ।

३४—अव्यय किसे कहते हैं ? इसके सभी भेद उदाहरण देकर समझाओ।

३५—संज्ञाओं की भाँति अव्ययों का प्रयोगकर वाक्य बनाओ।

३६—ऐसे शब्दों से वाक्य बनाओ जो विशेषण तथा क्रिया-विशेषण दोनों होते हों।

३७—वाक्यों में क्रियाविशेषणों का स्थान क्या है ? स्थान बदलने से वाक्य के अर्थ पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

३८—समुच्चय-बोधक अव्ययों से क्या समझते हो ? इसके कितने भेद हैं ? प्रत्येक के उदाहरण दो।

३९—विभाजक अव्यय समुच्चय बोधक क्यों कहलाते हैं ? क्या ये वास्तव में शब्दों को विभक्त करते हैं ?

४०—कुछ विस्मयादिबोधक अव्ययों के उदाहरण दो और उनके अपने वाक्यों में प्रयुक्त करो।

नि ®

श्रीयुत स्वर्गीय पं० संतलालजी विरचित

श्रीसिद्धचक्रविधान ।

(हिंदीभाषा-छन्दोबद्ध)

जिसको

शोलापुरवासी गांधी हरिभाई देवकरण एण्ड संस् द्वारा संरक्षित

भारतीय जैनसिद्धांत प्रकाशिनी संस्था

७ विश्वकोष लेन, कलकत्ताके

जैनसिद्धांत प्रकाशक प्रेसमें

मंत्री—श्रीलाल जैन काव्यतीर्थने

उस्मानाबाद (शोलापुर) वासी गांधी रूपचन्द्रजीके

स्वर्गीय सुपुत्र बालचंद्रजीके स्मरणार्थ

छपाकर प्रकाशित किया